بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक

बदर

क़ादियान

Weekly Badar Qadian

HINDI

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا

अनुवाद : ऐ ईमान लाने वालो ! अपने आप को और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ । (सूरः तहरीम, आयत 7)

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا

अनुवाद : और अपने घरवालों को नमाज़ का हुक्म दो और खुद भी उस पर मज़बूती से कायम रहो। (सूरः ताहा, आयत 133)

संपादक : शेख मुजाहिद अहमद | उप संपादक : सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11 | अंक-45

24 जमादिउल अव्वल 1448 हिज्री कमरी,05 नबुव्वत 1405 हिज्री शम्सी, 05 नवम्बर 2026 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

बच्चों की परवरिश: माता-पिता की ज़िम्मेदारी और नमाज़ की व्यावहारिक शिक्षा

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ: أَلَا كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْهُمْ۔

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"सुन लो ! तुममें से हर व्यक्ति रखवाला है और हर व्यक्ति से उसके अधीन लोगों के बारे में पूछा जाएगा। पुरुष अपने घरवालों का रखवाला है और उससे उसके घरवालों के बारे में पूछा जाएगा।"

(सहीह बुख़ारी, किताबुन्निकाह, हदीस 5200; सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारत, हदीस 1829)

★ ★ ★



हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी - मसीह मौऊद का उपदेश

संतान के लिए दुआएँ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बच्चों की परवरिश के बारे में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और दुआओं का महत्व बताते हुए फ़रमाते हैं:

"सही राह दिखाना और अच्छी परवरिश करना वास्तव में खुदा का काम है। बच्चों के पीछे बहुत अधिक पड़ना और किसी बात पर ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर देना, यानी हर छोटी-छोटी बात पर बच्चों को रोकना और टोकना, यह दिखाता है कि मानो सही राह दिखाने का अधिकार केवल हमारे ही पास है और हम उन्हें अपनी मर्ज़ी के अनुसार किसी रास्ते पर ले आएँगे। यह एक प्रकार का छिपा हुआ शिर्क है। हमारी जमाअत को इससे बचना चाहिए.....हम तो अपने बच्चों के लिए दुआ करते हैं और सामान्य रूप से शिक्षा के नियमों और तौर-तरीकों का पालन करवाते हैं। बस, इससे अधिक कुछ नहीं करते। फिर अपना पूरा भरोसा अल्लाह तआला पर रखते हैं। जिस बच्चे में भलाई का बीज होगा, वह समय आने पर हरा-भरा हो जाएगा।" (मलफ़ूज़ात, जिल्द प्रथम, पृष्ठ 309, संस्करण 2003 ई., प्रकाशित रब्वा)

★ ★ ★



श्रेष्ठ पीढ़ी का निर्माण: बच्चों की परवरिश और परहेज़गारी की ज़िम्मेदारी

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि माता-पिता अपनी संतान की अच्छी परवरिश करें और कोशिश करें कि उनकी भलाई केवल उन्हीं तक सीमित न रहे, बल्कि उसका असर पीढ़ी-दर-पीढ़ी उनकी संतान में भी पहुँचता रहे, तो वे ऐसी ऊँचे दर्जे की पीढ़ियाँ तैयार कर सकते हैं, जो इस्लाम और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए गर्व का कारण बनें।

अफ़सोस की बात है कि बहुत कम लोग ऐसे हैं जो अपनी संतान की सही परवरिश की ओर ध्यान देते हैं। उनमें व्यक्तिगत रूप से परहेज़गारी भी होती है, आध्यात्मिकता भी होती है, अच्छे आचरण भी होते हैं, दया और प्रेम की भावनाएँ भी होती हैं, सहनशीलता भी होती है, ज्ञान प्राप्त करने की लगन भी होती है और भलाई के कामों में आगे बढ़ने की योग्यता भी होती है। लेकिन उन्हें कभी इस बात का ध्यान नहीं आता कि वे अपनी संतान में भी ये गुण पैदा करने की कोशिश करें।

बेशक, विरासत के ज़रिए भी माता-पिता के कुछ गुण संतान में आ जाते हैं, लेकिन अच्छी पीढ़ी का बहुत बड़ा संबंध अच्छी परवरिश से होता है और एक मोमिन का कर्तव्य है कि वह इस मामले में कभी लापरवाही न करे।

यदि हर व्यक्ति, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, अपनी संतान की अच्छी परवरिश में लग जाए और कोशिश करे कि उसकी संतान उससे भी बढ़कर इस्लाम पर अपना सब कुछ न्योछावर करने वाली साबित हो, तो मुसलमानों में कभी गिरावट पैदा न हो। किसी क़ौम की गिरावट का सबसे बड़ा कारण यही होता है कि संतान की परवरिश की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। इसका नतीजा यह होता है कि केवल संख्या बढ़ने से कोई लाभ नहीं होता और क़ौम का रौब पूरी तरह समाप्त हो जाता है।

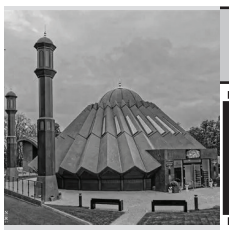
इसलिए असल बात, जिस पर ध्यान देने की ज़रूरत है, यह है कि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भलाई और परहेज़गारी के मैदान में हमसे भी आगे बढ़ने वाली हों, क्योंकि यही वह बात है जिस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गर्व कर सकते हैं। केवल संख्या में अधिक होना ऐसी बात नहीं है जो किसी को संतुष्ट करने के लिए काफ़ी हो। (तफ़सीरे कबीर, जिल्द 14, पृष्ठ 205-206)

★ ★ ★

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़्ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान



ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 11 सितम्बर 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

अल्लाह पर भरोसा करने के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी का विश्वास जगाने वाला ज़िक्र

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला पर भरोसा करने के संबंध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा

इस संबंध में पिछले शुक्रवार को बयान किया था। आज भी यही विषय है।

मोमिनों को अल्लाह पर भरोसा करने की नसीहत करते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं, जिसकी रिवायत हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने की है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि

जिसने सुबह और शाम सात बार यह कहा: حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۔ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ۔ अर्थात् अल्लाह मेरे लिए काफी है। उसके सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया और वही महान अर्श का रब्ब है। तो अल्लाह उस व्यक्ति की हर उस परेशानी के लिए काफी हो जाता है जो उसे चिंतित करती है, चाहे वह व्यक्ति इस बात में सच्चा हो या झूठा।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, अबवाबुन नौम, बाब मा यकूल इज़ा अस्बह, हदीस 5081)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने लिए अल्लाह पर भरोसा करने के संबंध में किस प्रकार दुआ माँगा करते थे।

इस बारे में एक रिवायत में आता है। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रुकू में जाते तो यह दुआ करते थे :

اَللّٰهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَلَكَ اَسْلَمْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ اَنْتَ رَبِّيْ خَشَعَ سَمْعِيْ وَبَصَرِيْ وَدَمِيْ وَلَحْمِيْ وَعَظْمِيْ وَعَصَبِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

अर्थात् हे अल्लाह! मैंने तेरे लिए रुकू किया और तुझ पर ईमान लाया। मैंने अपने आपको तेरे हवाले किया और तुझ पर भरोसा किया। तू ही मेरा रब्ब है। मेरी सुनने की शक्ति, देखने की शक्ति, मेरा खून, मेरा मांस, मेरी हड्डियाँ और मेरी नसें उस अल्लाह के सामने झुक गई हैं जो सारे संसार का रब्ब है।

(सुनन निसाई, किताबुत तातबीक, बाब नौअ आख़र, हदीस 1051)

फिर एक रिवायत में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जब भी मुझे कोई परेशानी होती तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास आते और कहते कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप यह कहें :

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَ كَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا۔

अर्थात् मैंने उस जीवित हस्ती पर भरोसा किया है जिसे कभी मृत्यु नहीं आएगी। सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने कभी किसी को अपना बेटा नहीं बनाया और जिसकी बादशाहत में कोई साझीदार नहीं है और न ही उसे किसी ऐसे सहायक की आवश्यकता है जो उसकी कमज़ोरी की अवस्था में उसका सहारा बने। और तू उसकी बहुत बड़ी बड़ाई बयान कर।

(अल-मुस्तदरक अलस्सहीहैन, किताबुद दुआ व तकबीर व तहलील व तस्बीह व ज़िक्र, हदीस नंबर 1876, जिल्द 1, पृष्ठ 689, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत)

ताऊस से रिवायत है। उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से सुना। उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने के लिए उठते तो यह दुआ करते थे :

[اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ لَكَ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ مَلِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُكَ الْحَقُّ، وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ، وَقَوْلُكَ حَقٌّ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالنَّبِيُّوْنَ حَقٌّ، وَمُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ، اَللّٰهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ وَبِكَ آمَنْتُ، وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ، وَبِكَ خَاصَمْتُ، وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ، فَاغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ، أَنْتَ الْمُقَدِّمُ، وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ]

यह एक लंबी दुआ है। इसका अनुवाद इस प्रकार है :

हे अल्लाह! सारी प्रशंसा तेरे ही लिए है। तू आकाशों और धरती को तथा उनमें रहने वाली हर चीज़ को कायम रखने वाला है। सारी प्रशंसा तेरे ही लिए है। आकाशों और धरती की बादशाहत तेरे ही लिए है और जो कुछ उनमें है, वह भी तेरा ही है। सारी प्रशंसा तेरे ही लिए है। तू आकाशों और धरती का और जो कुछ उनमें है, उसका भी प्रकाश है। सारी प्रशंसा तेरे ही लिए है। तू आकाशों और धरती का तथा उनमें रहने वाली हर चीज़ का बादशाह है। सारी प्रशंसा तेरे ही लिए है। तू ही सच्चा है और तेरा वादा सच्चा है। तुझसे मिलना भी सच्चा है। तेरी बातें सच्ची हैं। जन्नत सच्ची है और दोज़ख भी सच्ची है। सभी नबी सच्चे हैं और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी सच्चे हैं और कयामत का दिन भी निश्चित रूप से आने वाला है।

हे अल्लाह! मैंने तेरे सामने सिर झुका दिया है और तुझ पर ईमान लाया हूँ। मैंने तुझ पर ही भरोसा किया है और तेरी ही ओर झुका हूँ। तेरी ही सहायता से मैंने मुकाबला किया है और तेरे ही सामने फैसला चाहा है। मेरे उन कामों को भी माफ कर दे जो मैंने पहले किए और उन कामों को भी जो बाद में किए। उन बातों को भी माफ कर दे जिन्हें मैंने छिपाकर रखा और उन बातों को भी जिन्हें मैंने प्रकट किया। तू ही आगे करने वाला है और तू ही पीछे करने वाला है। तेरे सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। या आप यह फरमाते थे कि لَا إِلٰهَ غَيْرُكَ अर्थात् तेरे सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। यह बुखारी की रिवायत है।

(सहीह बुखारी, किताबुत तहज्जुद, बाबुत तहज्जुद बिल्लैल, हदीस 1120)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहा करते थे कि हे अल्लाह! मैं तेरी आज्ञा मानता हूँ और तुझ पर ईमान लाता हूँ। मैं तुझ पर भरोसा करता हूँ और तेरी ही ओर झुकता हूँ। तेरी ही सहायता से मुकाबला करता हूँ। हे अल्लाह! मैं तेरी इज़्ज़त की शरण माँगता हूँ कि तू मुझे गुमराह होने से बचाए। तेरे सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। तू ही हमेशा जीवित रहने वाला है, जिसे कभी मृत्यु नहीं आएगी, जबकि जिन्न और इंसान सब मर जाएँगे।

(सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़िक्र वुद दुआ वत्तौबा वल इस्तिग़फार, बाबुत तअव्वुज़ मिन शर्रि मा अमिल व मिन शर्रि मा लम यअमल, अनुवाद सहित, जिल्द 14, पृष्ठ 91, हदीस 4880, प्रकाशित नूर फाउंडेशन)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नज़र हर समय केवल अल्लाह तआला पर ही रहती थी।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस गुण के उच्च स्तर का उल्लेख करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक स्थान पर लिखा है, बल्कि अपने भाषण में बयान फरमाया है कि :

"रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खुदा तआला पर ऐसा भरोसा था कि हर मुसीबत और कठिनाई के समय उनकी नज़र उसी पर रहती थी और उसके सिवा हर चीज़ से अपना ध्यान हटा लेते थे।

इसमें कोई संदेह नहीं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आजकल के सूफियों की तरह साधनों को छोड़ने वाले नहीं थे।" अर्थात् आजकल के कुछ सूफी कहते हैं कि चीज़ों की आवश्यकता नहीं है, केवल अल्लाह पर भरोसा करना ज़रूरी है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम साधनों का उपयोग करते थे, "क्योंकि साधनों को छोड़ देना मानो खुदा तआला की बनाई हुई चीज़ों का अपमान करना और उसकी पैदा की हुई चीज़ों को बेकार समझना है। लेकिन

साधन जुटाने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूरी तरह खुदा तआला पर भरोसा करते थे। यद्यपि आप साधन जुटाते थे, लेकिन उन पर कभी भरोसा नहीं करते थे और केवल खुदा तआला के फज़ल की आशा रखते थे।"

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर घबराहट के समय यह कहते थे :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۔ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ۔

अर्थात् अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। वही महान शासन के सिंहासन का रब्ब है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। वही आकाशों का रब्ब है, वही धरती का रब्ब है और वही सम्मानित अर्श का रब्ब है।

(सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अनवारुल उलूम, जिल्द 1, पृष्ठ 496-497)

अर्थात् मेरा भरोसा और विश्वास केवल अल्लाह तआला पर ही है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ अर्थात् अल्लाह हमारे लिए काफी है और वही सबसे अच्छा काम बनाने वाला है। ये शब्द हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उस समय कहे थे जब उन्हें आग में डाला गया था। और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी यही शब्द उस समय कहे थे जब लोगों ने कहा कि इन लोगों ने तुम्हारे मुकाबले के लिए बड़ी तैयारी कर ली है। अर्थात् काफिरों ने। इसलिए उनसे डरो। हदीस की व्याख्या करने वाले विद्वानों के अनुसार ये शब्द ग़ज़वा-ए-उहद, हमराउल असद या ग़ज़वा-ए-खंदक आदि के अवसर पर कहे गए थे। इस बात ने उनके ईमान को और बढ़ा दिया और उन्होंने कहा : حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ अर्थात् अल्लाह हमारे लिए काफी है और वही सबसे अच्छा काम बनाने वाला है। बुखारी में यह रिवायत आती है।

(सहीह बुखारी, किताबुत तफसीर, बाब क़ौलिहिल लज़ीना क़ाला लहुमुन नासु... हदीस नंबर 4563; फतहुल बारी, जिल्द 8, पृष्ठ 290, कदीमी कुतुबखाना, मुकाबिल आराम बाग, कराची; तफसीरुल कुरआनिल अज़ीम, इब्ने कसीर, सूरह आले इमरान, आयत 174 के अंतर्गत, जिल्द 2, पृष्ठ 149-150, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत; अत-तफसीरुल मज़हरी, सूरह अल-अहज़ाब, आयत 10, जिल्द 5, पृष्ठ 487, दारुल कुतुब अल-इल्मिया; तफसीर बग़वी (मआलिमुत तंज़ील), जिल्द 1, पृष्ठ 374, सूरह आले इमरान, आयत 174 के अंतर्गत, इदारा तालीफात अशरफिया, मुल्तान)

मक्का के मुशरिकों ने अलग-अलग अवसरों पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तरह-तरह के लालच दिए और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला पर अपने बेमिसाल भरोसे के साथ उन्हें जवाब दिया।

यह किस प्रकार हुआ करता था? ऐसे ही एक अवसर का उल्लेख इब्ने इसहाक ने किया है कि एक दिन कुरैश के सरदार उत्बा बिन रबीआ कुरैश की सभा में बैठे हुए थे, जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिदे हराम में अकेले बैठे थे। उत्बा ने कहा : ऐ कुरैश के लोगो! क्या मैं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाकर उनसे बात करूँ? मैं उनके सामने कुछ सुझाव रखता हूँ। हो सकता है कि वह उनमें से कोई एक सुझाव स्वीकार कर लें। हम उनकी इच्छा पूरी कर दें और वह हमारे विरुद्ध अपने संदेश का प्रचार करना बंद कर दें।

यह उस समय की बात है जब हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम स्वीकार कर चुके थे और कुरैश देख रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। इस पर कुरैश ने कहा : ज़रूर ऐ अबुल वलीद! आप ही उनसे बात कीजिए।

इस पर उत्बा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया। वह आपके करीब बैठ गया और कहने लगा : भतीजे! तुम अच्छी तरह जानते हो कि अपने परिवार में तुम्हारा स्थान और सम्मान बहुत ऊँचा है। तुम्हारा खानदान भी सम्मानित है, लेकिन तुम अपनी कौम के सामने एक बहुत बड़ी बात लेकर आए हो, जिसने उनकी एकता को तोड़ दिया है। उनकी बुद्धि को कमतर बताया है। उनके पूज्य देवताओं और उनके धर्म को बुरा कहा है और उनके उन पूर्वजों को भी काफिर ठहरा दिया है जो इस दुनिया से जा चुके हैं। अब मेरी कुछ बातें ध्यान से सुनो। मैं तुम्हारे सामने कुछ सुझाव रखता हूँ। हो सकता है कि तुम उनमें से कोई एक स्वीकार कर लो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया : कहो अबुल वलीद! मैं सुन रहा हूँ।

उत्बा ने कहा : भतीजे! यदि इस संदेश को फैलाने से तुम्हारा उद्देश्य धन प्राप्त करना है तो हम अपना सारा धन इकट्ठा करके तुम्हें इतना धन दे देंगे कि तुम हम सबमें सबसे अधिक धनवान हो जाओगे। यदि तुम सम्मान और सरदारी चाहते हो तो हम तुम्हें अपना सरदार बना लेंगे। इसके बाद तुम्हारी सलाह के बिना कोई फैसला नहीं करेंगे। यदि तुम बादशाह बनना चाहते हो तो हम तुम्हें अपना बादशाह मान लेंगे।

और यदि तुम पर कोई ऐसी आत्मा या जिन्न हावी हो गया है जिसे तुम अपने ऊपर से हटा नहीं सकते, तो हम अच्छे से अच्छे वैद्यों से तुम्हारा इलाज करवाएँगे और इस पर अपना धन खर्च करेंगे, यहाँ तक कि तुम पूरी तरह ठीक होजाओ। क्योंकि कभी-कभी इंसान पर ऐसी हालत हावी हो जाती है जिसका इलाज करवाना पड़ता है। उस समय उन लोगों में यह धारणा भी प्रचलित थी कि शायद किसी जिन्न ने उस व्यक्ति पर अधिकार कर लिया है।

उत्बा अपनी बात पूरी कर चुका था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसकी बातें सुनते रहे। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया : ऐ अबुल वलीद! क्या तुम अपनी बात पूरी कर चुके हो? उसने कहा : जी हाँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया : अब मेरी बात सुनो। उसने कहा : ज़रूर! मैं सुन रहा हूँ।

तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सूरह हा-मीम सज्दा की ये आयतें पढ़ीं :

[بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ حٰمٓ ۔ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۔ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۔ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ.... (حٰمٓ السجدة:6-1)]

अर्थात् मैं अल्लाह के नाम से पढ़ता हूँ जो बहुत कृपा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है। हा-मीम। यह कुरआन बहुत कृपा करने वाले और बार-बार दया करने वाले खुदा की ओर से उतारा गया है। यह ऐसी किताब है जिसकी आयतें विस्तार से बयान की गई हैं और यह अरबी भाषा में कुरआन है, उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं। यह नेक लोगों को खुशखबरी देने वाला और बुरे काम करने वालों को सावधान करने वाला है। लेकिन उनमें से अधिकतर ने मुँह फेर लिया है और वे इसे सुनने के लिए भी तैयार नहीं हैं। वे कहते हैं कि जिस बात की ओर तुम हमें बुलाते हो, उसके मानने के लिए हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हुए हैं। अर्थात् तुम्हारी बातों का हमारे दिलों पर कोई असर नहीं हो सकता।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ये आयतें पढ़ते रहे। उत्बा चुप होकर पूरी एकाग्रता के साथ सुनता रहा। उसने अपने दोनों हाथ पीछे टिकाए हुए थे और उस समय वह बड़े ध्यान से कुरआन सुन रहा था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सजदे वाली आयत पर पहुँचे तो आपने सजदा किया। फिर उत्बा से फरमाया : ऐ अबुल वलीद! तुमने वह सब सुन लिया जो तुम्हें सुनना था। अब फैसला तुम्हारे हाथ में है। तुम्हारी बात मैंने सुन ली और तुमने मेरी बात सुन ली। अब तुम खुद फैसला करो।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अल्लाह तआला पर पूरा विश्वास और भरोसा हर दिन एक नए रूप में सामने आता था।

इसलिए इतिहास बताता है कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उत्बा को यह जवाब दिया तो उसके बाद भी आप अपनी उसी अवस्था पर कायम रहे। आपने उससे कहा कि तुम अपने आपको बदलो और फैसला खुद करो। आप तो अल्लाह के धर्म का प्रचार करते रहे और लोगों को उसकी ओर बुलाते रहे।

इसके बाद काफिरों का पूरा समूह मिलकर अबू तालिब के पास गया और उनसे कहा कि हमने आपसे निवेदन किया था कि आप अपने भतीजे को रोकें, लेकिन आपने उसे नहीं रोका। अब या तो हम उसे अपने विरुद्ध ऐसी बातें करने से रोकेंगे या फिर उसका और आपका मुकाबला करेंगे, यहाँ तक कि हम दोनों पक्षों में से एक पक्ष समाप्त हो जाएगा।

जब कुरैश ने अबू तालिब से यह बात कही तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुलाया और आपसे कहा : ऐ मेरे भाई के बेटे! मुझ पर इतना बोझ न डालो जिसे मैं सहन न कर सकूँ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समझा कि शायद आपके चाचा अब आपकी सहायता करना छोड़ देंगे और आपको कुरैश के हवाले कर देंगे। इस पर आपने फरमाया :

चाचा जान! खुदा की कसम! यदि ये लोग मेरे दाईं ओर सूरज और बाईं ओर चाँद भी रख दें, तब भी मैं अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटूँगा और अपने काम में लगा रहूँगा, यहाँ तक कि खुदा इसे पूरा कर दे या मैं इस कोशिश में अपनी जान दे दूँ।

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उठकर वहाँ से जाने लगे तो अबू तालिब

ने आपको आवाज़ देकर बुलाया और कहा : ऐ मेरे भतीजे! तुम जो चाहो कहते रहो। अल्लाह की कसम! मैं किसी भी कीमत पर तुम्हें उनके हवाले नहीं करूँगा।

(अस्सीरतुन नबविय्या, इब्ने हिशाम, पृष्ठ 200-201 तथा 220, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, 2001 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन सच्ची ऐतिहासिक घटनाओं का चित्र खींचते हुए इस प्रकार बयान फरमाया है कि जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को अल्लाह तआला की एकता का उपदेश देना और शिर्क का खंडन करना शुरू किया तो मक्का के लोगों को यह बात बहुत बुरी लगी। आखिर एक दिन वे आपस में सलाह करके एक प्रतिनिधिमंडल की शक्ल में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा अबू तालिब के पास आए और उनसे कहा कि आप हमारी कौम के सरदार हैं। हम आपका बहुत सम्मान करते हैं और आपके सम्मान के कारण ही हम आपके भतीजे से कुछ नहीं कहते। लेकिन अब मामला हद से आगे बढ़ गया है। हम आपके पास इसलिए आए हैं कि आप इस मामले में उससे हमारी ओर से आखिरी बार बात करें।

इसके बाद उन्होंने वही बातें दोहराईं जो उत्बा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कही थीं। अर्थात् किसी ऊँचे खानदान की और सबसे अधिक सुंदर स्त्री से विवाह कराने का लालच, धन-दौलत का लालच और बादशाहत का लालच।

इन लोगों ने कहा कि आप उससे कहें कि कम से कम वह हमारे बुतों को बुरा-भला न कहे। हम उससे यह नहीं कहते कि वह हमारे बुतों को माने। हम केवल इतना चाहते हैं कि वह हमारे बुतों की बुराई न करे। यदि वह हमारी इन बातों में से एक भी बात स्वीकार न करे तो फिर आप उसका साथ छोड़ दें। हम खुद उससे निपट लेंगे।

अबू तालिब बहुत नेक इंसान थे। वह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बहुत प्रेम करते थे, लेकिन उन्हें अपनी सरदारी भी बहुत प्यारी थी। उन्होंने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुलाया और कहा : आज तुम्हारी कौम मेरे पास आई थी। वे कहते थे कि ऐ अबू तालिब! हम तुम्हारा लिहाज़ करते हैं और तुम्हारे सम्मान के कारण ही हमने तुम्हारे भतीजे को अब तक कुछ नहीं कहा। लेकिन अब बात हद से आगे बढ़ गई है। यदि वह हमारी कोई दूसरी बात नहीं मानता तो कम से कम इतना तो मान ले कि हमारे बुतों को बुरा-भला न कहे।

उन्होंने यह भी कहा कि हम उसे अपना बादशाह बनाने के लिए तैयार हैं। यदि उसे धन चाहिए तो हम धन देने के लिए तैयार हैं। अरब में उससे बढ़कर कोई धनवान नहीं रहेगा। हम उसे यह सब देने के लिए तैयार हैं। यदि उसे किसी सुंदर स्त्री से विवाह करना है तो हम सबसे अच्छी स्त्री से उसका विवाह कराने के लिए तैयार हैं। संक्षेप में, वह जो भी माँगेगा, हम उसे पूरा करने के लिए तैयार हैं। उसे केवल इतना करना होगा कि हमारे बुतों को बुरा-भला न कहे।

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अबू तालिब के बहुत उपकार थे। उन्होंने आपको बचपन से ही बहुत प्रेम और प्यार के साथ पाला था और हर दुख तथा मुसीबत में आपका साथ दिया था। जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने चाचा की यह हालत देखी तो उनके उपकारों को याद करके आपकी आँखों में आँसू आ गए। लेकिन आपने फरमाया : चाचा! मैं तो यह नहीं कहता कि आप मेरी सहायता करें। आप निस्संदेह अपनी कौम का साथ दें और मुझे छोड़ दें। खुदा की कसम! यदि ये लोग सूरज को मेरे दाईं ओर और चाँद को मेरे बाईं ओर लाकर खड़ा कर दें, तब भी मैं एक खुदा का संदेश सुनाने से पीछे नहीं हटूँगा।

देखिए! खुदा तआला की हस्ती पर कितना दृढ़ विश्वास और भरोसा था। हालाँकि सूरज का अपनी जगह से हट जाना इतना बड़ा चमत्कार है कि यदि ऐसा हो जाए तो इंसान हैरान रह जाए। लेकिन

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि यदि ये लोग सूरज को उसकी जगह से हटाकर मेरे पास लाकर खड़ा कर दें और चाँद को भी उसकी जगह से हटाकर मेरे पास लाकर खड़ा कर दें, तब भी मुझे खुदा तआला की हस्ती पर इतना विश्वास और भरोसा है कि मैं इन चीज़ों को जादूगरी समझूँगा और उनकी मूर्तिपूजा पर हमेशा आपत्ति करता रहूँगा और अपने काम से कभी पीछे नहीं हटूँगा।

(माखूज़ अज़ उस्वा-ए-हसना, अनवारुल उलूम, जिल्द 17, पृष्ठ 105-106)

यह अल्लाह तआला की हस्ती पर विश्वास और पूरे भरोसे का ऐसा स्थान है जिसकी मिसाल कहीं दिखाई नहीं देती।

इस घटना का उल्लेख करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि :

"जब ये आयतें उतरीं कि मुशरिक गंदे हैं, अपवित्र हैं, सबसे बुरी मख़लूक़ हैं, मूर्ख हैं, शैतान की संतान हैं और उनके पूज्य وَقُوْدُ النَّار अर्थात् आग का ईंधन हैं और حَصَبُ جَهَنَّم अर्थात् जहन्नम का ईंधन हैं, तो अबू तालिब ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुलाकर कहा कि ऐ मेरे भतीजे! अब तुम्हारी बुराई करने वाली बातों से कौम बहुत भड़क गई है और ऐसा लगता है कि वे तुम्हें और साथ ही मुझे भी मार डालेंगे। तुमने उनके समझदार लोगों को मूर्ख कहा है और उनके बुज़ुर्गों को सबसे बुरी मख़लूक़ कहा है। उनके उन पूज्य देवताओं को, जिनका वे सम्मान करते हैं, जहन्नम का ईंधन और आग का ईंधन ठहरा दिया है और आम तौर पर उन सबको गंदा, शैतान की संतान और अपवित्र कहा है। मैं तुम्हारी भलाई के लिए कहता हूँ कि अपनी ज़बान को रोको और बुरा-भला कहने से बचो, वरना मुझमें कौम का मुकाबला करने की शक्ति नहीं है।"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब में कहा कि :

"ऐ चाचा! यह बुरा-भला कहना नहीं है, बल्कि सच्चाई को बयान करना है और वास्तविकता को उसके सही स्थान पर स्पष्ट करना है। यही तो वह काम है जिसके लिए मुझे भेजा गया है। यदि इसके कारण मुझे मरना पड़े तो मैं खुशी से इस मौत को स्वीकार करता हूँ। मेरा जीवन इसी रास्ते के लिए समर्पित है। मैं मौत के डर से सच्चाई बयान करने से नहीं रुक सकता। और ऐ चाचा! यदि तुम्हें अपनी कमज़ोरी और अपनी परेशानी का ध्यान है तो तुम मुझे अपनी शरण में रखने से पीछे हट सकते हो। खुदा की कसम! मुझे तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं। मैं खुदा के आदेश पहुँचाने से कभी नहीं रुकूँगा। मुझे अपने मालिक के आदेश अपनी जान से भी अधिक प्यारे हैं। खुदा की कसम! यदि इस रास्ते में मुझे मार दिया जाए तो मैं चाहता हूँ कि बार-बार जीवित होकर हमेशा इसी रास्ते में मरता रहूँ। यह डरने की जगह नहीं है, बल्कि मुझे इस बात में बहुत आनंद मिलता है कि मैं उसके रास्ते में दुख उठाऊँ।"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह बातें बयान कर रहे थे और आपके चेहरे पर सच्चाई तथा प्रकाश से भरी हुई कोमलता दिखाई दे रही थी। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी बात पूरी कर चुके तो सच्चाई की रोशनी देखकर अबू तालिब की आँखों से अपने आप आँसू बहने लगे और उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारी इस ऊँची अवस्था से अनजान था। तुम तो बिल्कुल ही अलग रंग और अलग शान रखते हो। जाओ, अपने काम में लगे रहो। जब तक मैं जीवित हूँ, जहाँ तक मेरी शक्ति होगी, मैं तुम्हारा साथ देता रहूँगा।"

(अज़ाला-ए-औहाम, भाग 1, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 3, पृष्ठ 110-111)

इसी प्रकार ताइफ़ से वापसी पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अल्लाह पर भरोसे की एक घटना है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले हैं। ताइफ़ के सरदारों को इस्लाम का संदेश देने के लिए गए हैं, जहाँ उन लोगों ने ज़ुल्म की सारी हदें पार कर दीं। अब आप वापस आ रहे हैं और देखने में मक्का में दाखिल होने का भी कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। आपके साथ एक सेवक है और वह परेशान है कि अब क्या होगा? लेकिन आपको अपने रब्ब पर पूरा भरोसा है।

इस घटना का उल्लेख करते हुए आपके वही सेवक हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि जब मैंने आपकी सेवा में निवेदन किया कि ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अब आप मक्का में किस प्रकार दाखिल होंगे, जबकि उन्होंने आपको वहाँ से निकाल दिया है?

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कितने भरोसे के साथ जवाब दिया कि ऐ ज़ैद! तुम देखोगे कि अल्लाह तआला ज़रूर कोई रास्ता निकाल देगा। अल्लाह तआला अपने धर्म की सहायता करने वाला है। वह अपने नबी को अवश्य विजय प्रदान करेगा।

इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुरैश के सरदारों के पास संदेश भेजे कि वे आपको अपनी शरण में लेकर मक्का में दाखिल होने का प्रबंध करें। सभी सरदारों ने इनकार कर दिया। आखिरकार एक सम्मानित सरदार मुतइम बिन अदी ने आपको अपनी शरण में लेकर मक्का में दाखिल कराने की घोषणा की।

(माखूज़ अज़ तबकातुल कुबरा, ज़िक्रु सबबि रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इलत्ताइफ़, जिल्द 1, पृष्ठ 165, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, 1990 ई.; सुबुलुल हुदा, जिल्द 2, पृष्ठ 440)

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हिजरत के अवसर पर अल्लाह पर भरोसा करने के क्या ही सुंदर उदाहरण थे!

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हिजरत की अनुमति मिली तो आपने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने हिजरत के कार्यक्रम के बारे में बताया

और उनके सुपुर्द एक बहुत ही निष्ठापूर्ण काम किया। आपने फरमाया कि आज रात वह आपके पवित्र बिस्तर पर वही हरी चादर ओढ़कर सोएँगे, जिसे एक दूसरी रिवायत के अनुसार लाल रंग की हज़रमी चादर बताया गया है। यह यमन की चादर थी। उस क्षेत्र के कारण उसे हज़रमी कहा जाता था। बहरहाल, वह चादर लेकर सोएँ, जिसे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं ओढ़कर सोया करते थे।

अपने इस जान देने वाले वफादार सेवक को खुदा की सहायता और मदद का विश्वास दिलाते हुए आपने कहा कि चिंता मत करना और आराम से मेरे बिस्तर पर सोए रहना। दुश्मन तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकेगा।

इसके अतिरिक्त सच्चे और अमानतदार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का के लोगों की दी हुई अमानतों की भी चिंता थी और उन्हें वापस करने की जिम्मेदारी का एहसास था। इसलिए आपने फरमाया कि लोगों की अमानतें उन्हें वापस करके मेरे पीछे आ जाना। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बाद में वहाँ आ जाएँ।

इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर से बाहर निकले। उस समय मक्का के काफिरों के चुने हुए बहादुर लोग, जिनकी आँखों में मानो खून उतर आया था, हाथों में तलवारें लिए आपके घर के ठीक बाहर पूरी तरह सतर्क होकर पहरा दे रहे थे। वे इस इंतज़ार में थे कि कब रात गहरी हो और वे हमला करके एक ही वार में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को समाप्त कर दें, खुदा न करे।

अबू जहल, जो मानो उनका सरदार था, बड़े घमंड और मज़ाक के साथ कह रहा था कि मुहम्मद कहता है कि यदि तुम उसके मामले में उसका कहना मानोगे तो तुम अरब और अजम के बादशाह बन जाओगे। फिर अपनी मृत्यु के बाद जब तुम दोबारा उठाए जाओगे तो तुम्हारे लिए जॉर्डन के बागों जैसे बाग होंगे। और यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारे बीच मार-काट होगी।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर से बाहर निकले और फरमाया : हाँ! मैं ऐसा ही कहता हूँ। इसके बाद आप सूरह यासीन की ये आयतें पढ़ते हुए बाहर निकले :

[يٰسٓ۔ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ۔ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ۔ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ۔ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ۔ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ۔ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ۔ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ۔ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ۔ (یٰس: 10-2)]

इसका अनुवाद यह है कि हे सरदार! बुद्धिमत्ता से भरे कुरआन की कसम! निश्चय ही तुम रसूलों में से हो। सीधे रास्ते पर हो। यह उस ज़बरदस्त और बार-बार दया करने वाले खुदा की ओर से उतारा गया है, ताकि तुम ऐसी कौम को सावधान करो जिसके पूर्वजों को सावधान नहीं किया गया था। इसलिए वे बेखबर पड़े हुए हैं। उनमें से अधिकतर के बारे में यह बात पूरी हो चुकी है कि वे ईमान नहीं लाएँगे। हमने उनकी गर्दनों में तौक डाल दिए हैं जो उनकी ठोड़ी तक पहुँचते हैं, इसलिए उनके सिर ऊपर उठे हुए हैं। और हमने उनके सामने भी एक दीवार खड़ी कर दी है और उनके पीछे भी एक दीवार खड़ी कर दी है। फिर हमने उन पर पर्दा डाल दिया है, इसलिए वे देख नहीं सकते।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके सिरों पर मिट्टी डालते हुए ये आयतें पढ़कर उनके सामने से निकल गए। लेकिन खुदा की कुदरत देखिए कि जाते समय किसी को भी आप दिखाई नहीं दिए। बल्कि वे लोग समय-समय पर अंदर झाँककर देखते और संतुष्ट हो जाते कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने बिस्तर पर ही मौजूद हैं।

(माखूज़ अज़ अस्सीरतुन नबविय्या, इब्ने हिशाम, पृष्ठ 342, बाब हिजरतुर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, 2001 ई.; मुहम्मद रसूलुल्लाह वल्लज़ीना मआहू, जिल्द 3, पृष्ठ 74, बाबुल हिजरत, प्रकाशित मकतबा मिस्र; तबकातुल कुबरा, इब्ने साद, जिल्द 1, पृष्ठ 176; नुख़बुल अफकार फी तनकीहि मबानिल अख़बार फी शरहि मआनिल आसार, लेखक इमाम बदरुद्दीन ऐनी, जिल्द 6, पृष्ठ 111, प्रकाशित वज़ारतुल औकाफ़ वश्शुऊनिल इस्लामिया, कतर, 2008 ई.)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिजरत और आपके इस भरोसे का उल्लेख करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐतिहासिक घटनाओं के हवाले से जिस प्रकार बयान फरमाया है, वह इस प्रकार है :

"जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला की ओर से हिजरत का आदेश मिला तो आप हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने साथ लेकर जबल-ए-सौर की ओर गए, जो मक्का से लगभग छह-सात मील की दूरी पर है। इस पहाड़ की चोटी पर एक गुफा में छिपकर बैठ गए।

सुबह जब काफिरों ने देखा कि आप अपने घर में मौजूद नहीं हैं और हर प्रकार के पहरे के बावजूद मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सफलतापूर्वक वहाँ से निकल गए हैं तो वे तुरंत आपकी तलाश में निकल पड़े। वे अपने साथ मक्का के कुछ सबसे अच्छे रास्ते का पता लगाने वाले लोगों को भी ले गए, जिन्हें पैरों के निशान पहचानने में बहुत महारत हासिल थी। वे लोग उन्हें जबल-ए-सौर तक ले आए और कहने लगे कि बस, यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहीं हैं तो यहीं हैं। इसके आगे कहीं भी उनके निशान नहीं मिलते।

उस समय हालत यह थी कि दुश्मन गुफा के बिल्कुल ऊपर खड़ा था। गुफा का मुँह भी संकरा नहीं था कि उसके अंदर झाँकना मुश्किल होता, बल्कि वह एक खुली और बड़ी गुफा थी। उसके अंदर झाँककर बड़ी आसानी से पता लगाया जा सकता था कि कोई व्यक्ति अंदर बैठा है या नहीं।

लेकिन ऐसी हालत में भी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कोई डर नहीं छाता। बल्कि आपकी पवित्र शक्ति के प्रभाव से हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का दिल भी मज़बूत रहता है। वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथियों की तरह यह नहीं कहते कि हम पकड़े गए। बल्कि यदि उन्होंने कुछ कहा था तो केवल इतना कहा कि ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! दुश्मन इतना करीब आ चुका है कि यदि वह ज़रा भी नीचे देखे तो हमें देख सकता है।

लेकिन रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

اُسْكُتْ يَا اَبَابَكْرٍ اِثْنَانِ اللّٰهُ ثَالِثُهُمَا۔

ऐ अबू बक्र! चुप रहो। हम इस समय दो नहीं हैं, बल्कि हमारे साथ तीसरा अल्लाह भी है। फिर वे हमें कैसे देख सकते हैं?

चुनाँचे ऐसा ही हुआ। इसके बावजूद कि दुश्मन गुफा के बिल्कुल ऊपर तक पहुँच चुका था, फिर भी उसे यह हिम्मत नहीं हुई कि आगे बढ़कर अंदर झाँक सके। वह वहीं से बड़बड़ाता हुआ, बेकार की बातें करता हुआ वापस चला गया।

संक्षेप में, इस घटना का एक पहलू यह है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथियों ने घबराकर कहा था कि ऐ मूसा! हम पकड़े गए। मानो उन्होंने अपने साथ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को भी इस मुसीबत में शामिल समझ लिया और यह विचार किया कि अब हम सब फिरौन की पकड़ में आने वाले हैं। लेकिन

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के भरोसे का आपके साथी पर भी ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसकी ज़बान से भी यह शब्द नहीं निकले कि हम पकड़े गए। उसने केवल इतना कहा कि दुश्मन इतना करीब आ चुका है कि यदि वह हमें देखना चाहे तो देख सकता है। लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस विचार को भी सहन नहीं किया और फरमाया कि ऐसा विचार भी मत करो। इस समय हम दो नहीं हैं, बल्कि हमारे साथ एक और हस्ती भी है और वह हमारा खुदा है।"

(तफसीर कबीर, जिल्द 9, पृष्ठ 416-417, संस्करण 2023 ई.)

हिजरत की घटना और आपके भरोसे तथा हिम्मत का उल्लेख करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं :

"हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की सच्चाई उस समय प्रकट हुई जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को घेर लिया गया था। यद्यपि कुछ लोगों की राय आपको मक्का से निकालने की भी थी, लेकिन असल इरादा तो हत्या करने का ही था। ऐसी हालत में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी सच्चाई और वफादारी का ऐसा उदाहरण दिखाया जो हमेशा के लिए एक मिसाल रहेगा। इस मुसीबत की घड़ी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उन्हें अपने साथ चुनना ही हज़रत सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की श्रेष्ठता और उनकी ऊँची वफादारी का एक बहुत बड़ा प्रमाण है।"

आप अलैहिस्सलाम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु के गुणों का भी उल्लेख फरमा रहे हैं।

"इसी प्रकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चुनाव भी था। उस समय आपके पास सत्तर-सत्तर, अस्सी-अस्सी सहाबा मौजूद थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी आपके पास ही थे, लेकिन आपने उन सबमें से हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को ही चुना। इसमें क्या भेद है? बात यह है कि अल्लाह का नबी खुदा तआला की नज़र से देखता है। उसकी समझ खुदा तआला की ओर से आती है। इसलिए अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने विशेष

दर्शन और इल्हाम के द्वारा बता दिया था कि इस काम के लिए सबसे अच्छे और योग्य हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ही हैं।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु उस कठिन समय में आपके साथ हुए। यह बहुत खतरनाक परीक्षा का समय था। जब हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर इस प्रकार का समय आया तो उनके शिष्य उन्हें छोड़कर भाग गए और उनमें से एक ने तो सामने ही आपको बुरा-भला कहा। लेकिन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में से हर एक ने पूरी वफादारी का उदाहरण दिखाया।

संक्षेप में, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपका पूरा साथ दिया और आप एक गुफा में जाकर छिप गए, जिसे ग़ार-ए-सौर कहते हैं। दुष्ट काफिर, जो आपको कष्ट पहुँचाने की योजनाएँ बना चुके थे, तलाश करते हुए उस गुफा तक पहुँच गए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने निवेदन किया कि अब तो वे बिल्कुल हमारे सिर पर पहुँच गए हैं। यदि किसी ने ज़रा भी नीचे नज़र की तो वह हमें देख लेगा और हम पकड़े जाएँगे।

उस समय आपने फरमाया : لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا (अत्तौबा : 40)

ग़म मत करो, निश्चय ही अल्लाह हमारे साथ है।

इस शब्द पर विचार करो कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु को भी अपने साथ शामिल करते हैं। आपने फरमाया : इन्नल्लाहा मआना। अर्थात् अल्लाह हमारे साथ है। 'हमारे साथ' कहने में आप दोनों शामिल हैं। यानी तुम्हारे और मेरे साथ अल्लाह है।

अल्लाह तआला ने एक पलड़े में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रखा और दूसरे पलड़े में हज़रत सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु को। उस समय दोनों ही परीक्षा में थे, क्योंकि यही वह स्थान था जहाँ से या तो इस्लाम की नींव पड़नी थी या उसका अंत हो जाना था।

दुश्मन गुफा के ऊपर मौजूद थे और आपस में तरह-तरह की बातें कर रहे थे। कुछ लोग कहते थे कि इस गुफा की तलाशी लो, क्योंकि पैरों के निशान यहीं आकर समाप्त हो जाते हैं। लेकिन उनमें से कुछ कहते थे कि यहाँ किसी इंसान का आना-जाना कैसे हो सकता है? मकड़ी ने जाला बना रखा है और कबूतर ने अंडे दिए हुए हैं।

इस प्रकार की बातें करने वालों की आवाज़ें गुफा के अंदर पहुँच रही थीं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें साफ सुन रहे थे। ऐसी हालत में दुश्मन वहाँ आए हुए थे कि वे सब कुछ समाप्त करना चाहते थे और पागलों की तरह आगे बढ़े चले आ रहे थे। लेकिन

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिम्मत और बहादुरी देखिए कि दुश्मन आपके सिर पर मौजूद हैं और आप अपने सच्चे साथी सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु से फरमा रहे हैं : لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا। अर्थात् ग़म मत करो, निश्चय ही अल्लाह हमारे साथ है। ये शब्द साफ बताते हैं कि आपने यह बात ज़बान से कही थी, क्योंकि इसे सुनने के लिए आवाज़ की आवश्यकता थी। केवल इशारे से काम नहीं चल सकता था। बाहर दुश्मन आपस में सलाह कर रहे थे और गुफा के अंदर सेवक और उसके स्वामी भी आपस में बातें कर रहे थे। इस बात की कोई परवाह नहीं की गई कि कहीं दुश्मन आवाज़ सुन न लें। यह अल्लाह तआला पर पूरे ईमान और उसकी पहचान का प्रमाण है। खुदा तआला के वादों पर पूरा भरोसा था।"

(मलफूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 339 से 341, संस्करण 2022 ई.)

हिजरत के इस सफर में आपके और भी ऐसे कई वाकये हैं जिनमें अल्लाह तआला पर पूरा भरोसा दिखाई देता है। इंशाअल्लाह उनका उल्लेख आगे किया जाएगा।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

अहमद बेग ने बड़ी विनम्रता और दीनता के साथ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से निवेदन किया कि आप जायदाद नाम करने वाले कागज़ पर अपने हस्ताक्षर कर दें।

चुनाँचे हज़रत साहब लगभग इसके लिए तैयार हो गए, लेकिन फिर इस विचार से रुक गए कि इस मामले में सुन्नत के अनुसार इस्तिखारा कर लेना ज़रूरी है। इसलिए आपने मिर्ज़ा अहमद बेग को यही जवाब दिया कि इस्तिखारा करने के बाद यदि हस्ताक्षर करने होंगे तो कर दूँगा।

इसके बाद मिर्ज़ा अहमद बेग के बार-बार आग्रह करने पर इस्तिखारा किया गया। वह इस्तिखारा क्या था, मानो आसमानी निशान दिखाने का समय आ पहुँचा था, जिसे खुदा तआला ने इस रूप में प्रकट किया।

चुनाँचे इस्तिखारे के जवाब में खुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि,

"इस व्यक्ति की बड़ी बेटी के विवाह के लिए बातचीत शुरू करो और उनसे कह दो कि तुम्हारे साथ हर प्रकार का अच्छा व्यवहार और कृपा इसी शर्त पर की जाएगी। यह विवाह तुम्हारे लिए बरकत का कारण और रहमत का एक निशान होगा। तुम उन सभी बरकतों और रहमतों में हिस्सा पाओगे, जिनका उल्लेख 20 फ़रवरी 1886 के विज्ञापन में किया गया है।

लेकिन यदि विवाह से इनकार किया तो इस लड़की का अंजाम बहुत ही बुरा होगा और जिस किसी दूसरे व्यक्ति से उसका विवाह होगा, वह विवाह के दिन से ढाई साल के अंदर मर जाएगा। इसी तरह इस लड़की का पिता भी तीन साल के अंदर मर जाएगा। उनके घर में फूट, तंगी और मुसीबत आ पड़ेगी और इस बीच के समय में भी इस लड़की को कई अप्रिय घटनाओं और दुखों का सामना करना पड़ेगा।"

इस खुदाई संदेश के साथ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक टिप्पणी भी लिखी कि,

"तीन साल के अंदर मृत्यु होने का हिसाब विवाह के दिन से है, लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि इससे पहले कोई घटना या दुर्घटना न हो। बल्कि खुदा की ओर से मिलने वाले दृश्यों के अनुसार, जिस व्यक्ति को यह पत्र लिखा गया है, अर्थात् मिर्ज़ा अहमद बेग, उसके जीवन में ऐसी घटनाओं का समय निकट दिखाई देता है, जिनका अंजाम मालूम नहीं। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।"

जब इस्तिखारे के जवाब में यह खुदाई संदेश मिला तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसे प्रकाशित नहीं किया, बल्कि केवल एक निजी पत्र के ज़रिए मुहम्मदी बेगम के पिता को इसकी सूचना दे दी। क्योंकि आपको विश्वास था कि इसे प्रकाशित करने से वह दुखी होगा। इसलिए आपने उचित समझते हुए इसके प्रकाशन के लिए किसी दूसरे समय की प्रतीक्षा की।

लेकिन जल्द ही स्वयं उस लड़की के मामा मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन ने बहुत अधिक क्रोध में आकर इस पूरी बात को स्वयं ही प्रकाशित कर दिया। केवल ज़बानी तौर पर ही नहीं, बल्कि समाचार पत्रों में भी इस पत्र को खूब प्रकाशित किया। इसके बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी इस मामले को सबके सामने प्रकट करने का अच्छा अवसर मिल गया। शेष ..

★ ★ ★

अख़बार बदर खुद भी पढ़ें और अपने मित्रों व परिचितों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें

हमारे मार्गदर्शक हज़रत खलीफ़तुल मसीह पंचम (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) ने अख़बार बदर के दिसंबर 2014 के विशेषांक के लिए अपना संदेश भेजते हुए फ़रमाया:

"अख़बार बदर के प्रबंधन और पाठकों को यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि इस अख़बार का प्रकाशन जमाअत के सदस्यों की आध्यात्मिक सुधार और प्रगति के लिए किया गया था। हमारे बुज़ुर्गों ने प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, पूर्ण लगन के साथ इसे निरंतर जारी रखने का प्रयास किया और उनकी प्रार्थनाओं पवित्र प्रयासों के आशीर्वाद से ही यह आज तक प्रकाशित हो रहा है। यह बात इस मांग को जन्म देती है कि अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और इससे लाभ उठाएं। अल्लाह तआला अपनी कृपा से भारत के अहमदियों को विशेष रूप से और दुनिया भर में रहने वाले अहमदियों को सामान्य रूप से, इसके अध्ययन और इससे जुड़े आशीर्वादों को प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस अत्यंत महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक उपदेश को ध्यान में रखते हुए, अहमदिया जमाअत के सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि प्रत्येक घर में अख़बार बदर के अध्ययन को सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है। अख़बार बदर में कुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के उच्च वचनों के अतिरिक्त, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जुमअः के उपदेश, भाषणों, साथ ही साथ हज़ूर अनवर के विभिन्न देशों की पवित्र यात्राओं की अत्यंत रोचक और ईमान बढ़ाने वाली रिपोर्टें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं, जिनका अध्ययन प्रत्येक अहमदी के लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला की कृपा और हमारे मार्गदर्शक हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दया से अब यह अख़बार उर्दू के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, उड़िया और कन्नड़ भाषाओं में भी प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी साथियों ने अभी तक अख़बार बदर अपने नाम से जारी नहीं करवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर अपने नाम से जारी करवाकर स्वयं भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य सदस्यों को भी इसे पढ़ने का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हमारे हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के उपदेशों पर, उनकी वास्तविक भावना के अनुसार, पूर्ण रूप से अमल करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

अख़बार बदर के समय पर न पहुंचने, चंदे की अदायगी, या किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कृपया कार्यालय प्रबंधक, साप्ताहिक अख़बार बदर से संपर्क करें। (प्रबंधन)

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ऑस्ट्रेलिया दौरा 2013

(भाग -7)

मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार सात बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने कार्यालय में तशरीफ़ लाए। आदरणीय अमीर साहब ऑस्ट्रेलिया ने अपने परिवार के साथ हुज़ूर अनवर से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

पारिवारिक मुलाकात के बाद अमीर साहब ऑस्ट्रेलिया ने हुज़ूर अनवर से कार्यालय में मुलाकात की। इस मुलाकात में हुज़ूर अनवर ने विभिन्न मामलों और कामों के संबंध में अमीर साहब को आवश्यक निर्देश दिए।

इसके बाद जमाअत अहमदिया मेलबर्न के सदर जमाअत चौधरी सफदर जावेद साहब ने अपनी आमिला के दो सदस्यों के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। उन्होंने अहमदिया सेंटर मेलबर्न में कुछ आवासीय हिस्सों के निर्माण के संबंध में नक्शे पेश किए और हुज़ूर अनवर से मार्गदर्शन तथा आवश्यक निर्देश प्राप्त किए।

देश फ़िजी से आदरणीय मास्टर मुहम्मद हुसैन साहब और उनके परिवार के सदस्य हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाकात के लिए आए हुए थे। इस परिवार ने भी अपने प्यारे आका से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

मास्टर मुहम्मद हुसैन साहब फ़िजी के पुराने और शुरुआती स्थानीय अहमदियों में से हैं। आपने बाकायदा अपनी ज़िंदगी वक़्फ़ की और अक्तूबर 1983 ई. से स्थानीय मुबल्लिग़ के रूप में नियुक्त हुए। आपने फ़िजी की भाषा (कविती) में पवित्र क़ुरआन के अनुवाद की समीक्षा का काम भी किया। आप अहमदिया स्कूल लाटोका के प्रधानाध्यापक भी रहे। बल्कि यह स्कूल आपकी ही देखरेख में स्थापित हुआ था। 1971 ई. में जब फ़िजी जमाअत ने अपना छापाखाना नूर अहमदिया प्रेस के नाम से शुरू किया तो आप प्रेस के कामकाज और छपाई के कामों की देखरेख करते रहे। इस समय आप बुढ़ापे के कारण पहियों वाली कुर्सी पर हैं। अल्लाह तआला उन्हें सेहत और सलामती वाली ज़िंदगी प्रदान करे। आमीन।

मुलाकातों के बाद पौने नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुलहुदा में तशरीफ़ लाए और मग़रिब तथा इशा की नमाज़ें मिलाकर पढ़ाईं। नमाज़ें अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

आज ऑस्ट्रेलिया में ठहरने का आख़िरी दिन था और ऑस्ट्रेलिया के इस विशाल महाद्वीप का 27 दिनों पर आधारित दौरा अपने अंत को पहुँच रहा था।

ऑस्ट्रेलिया के शुरुआती अहमदियों का उल्लेख

ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न कब्रिस्तानों में जो शुरुआती अहमदी दफ़न हैं, उनमें से कुछ का उल्लेख पहले भी विभिन्न रिपोर्टों में हो चुका है।

एक और शुरुआती अहमदी मुहम्मद आलम कंधारी साहब हैं। मुहम्मद आलम कंधारी साहब उन मुस्लिम अफ़ग़ान ऊँट चलाने वालों में से अकेले अफ़ग़ान हैं, जिनके बारे में एक ऑस्ट्रेलियाई लेखिका Madeliene Bronato ने उनकी जीवनी भी लिखी है और आपका उल्लेख ऑस्ट्रेलियाई जीवनियों में भी मिलता है।

आपने ऊँट चलाने वाले, खदान में काम करने वाले, फेरी लगाकर सामान बेचने वाले और व्यापारी आदि के रूप में विभिन्न काम किए और आख़िर में जड़ी-बूटियों से इलाज करने वाले वैद्य (Herbalist) के रूप में काम करते रहे और मानव जाति को लाभ पहुँचाते रहे। आपके चाहने वालों और आपसे इलाज करवाने वालों की संख्या हज़ारों में थी।

1934 ई. में जब कुछ हालात के कारण मजबूर होकर आपने ऑस्ट्रेलिया छोड़ने का फैसला किया तो दस हज़ार और एक अन्य हवाले के अनुसार उन्नीस हज़ार ऑस्ट्रेलियाई लोगों ने आपको लिखित रूप में निवेदन किया कि आप ऑस्ट्रेलिया छोड़कर न जाएँ।

आप इलाज करने की कोई फीस नहीं लेते थे, लेकिन भेंट के रूप में दी गई रकम स्वीकार कर लेते थे। आप जो कुछ कमाते थे, उसे ग़रीबों और बेसहारा लोगों में बाँट दिया करते थे और दान-पुण्य भी करते थे। यही कारण है कि जब मार्च 1964 ई. में 108 वर्ष की आयु में आपका देहांत हुआ तो एडिलेड शहर में आपके जनाज़े में शामिल होने वालों की संख्या हज़ारों में थी और लोगों की कतार डेढ़ मील तक लंबी थी।

एक लेखिका Christine Stevens ने आपके बारे में लिखा है कि 1930 और 1940 के दशकों में दक्षिण ऑस्ट्रेलिया के लगभग हर घर में आपका नाम जाना-पहचाना था।

आप इस्लाम और पवित्र क़ुरआन की शिक्षाओं को अख़बारों में प्रकाशित करवाते रहते थे। अपने मरीज़ों को भी पवित्र क़ुरआन और इस्लाम के बारे में पुस्तिकाएँ पढ़ने के लिए देते थे और अल्लाह के संदेश को लोगों तक पहुँचाने के काम में लगे रहते थे।

आपके बारे में एक ऑस्ट्रेलियाई लेखक Micahel Sigler ने लिखा है कि संभवतः ऑस्ट्रेलिया में आप पहले व्यक्ति थे जिन्होंने क़ुरआन की शिक्षाओं के अनुसार भोजन के गुणों और मानव शरीर पर उसके प्रभावों के बारे में आवाज़ उठाई और लेख लिखे। आपकी कब्र एडिलेड शहर के कब्रिस्तान Centennial Park Cemetery में है।

ऑस्ट्रेलिया की धरती पर 1903 ई. में हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करने वाले सबसे पहले अहमदी हज़रत सूफ़ी हसन मूसा ख़ान साहब के प्रचार से कई लोग अहमदी हुए। लेकिन उनके नाम और दूसरी जानकारियाँ मालूम नहीं हो सकीं। फिर भी कुछ कब्रों पर लगे पत्थरों पर लिखी इबारतें इस बात की गवाही देती हैं कि उनमें मसीह मौऊदी पर ईमान लाने वाले लोग दफ़न हैं।

पर्थ (Perth) शहर में हज़रत सूफ़ी हसन मूसा ख़ान साहब की कब्र की तलाश के दौरान कर्राकट्टा (Karrakatta) कब्रिस्तान के मुसलमानों वाले हिस्से में कुछ और कब्रों के बारे में भी पता चलता है कि उनमें अहमदी दफ़न थे।

उदाहरण के तौर पर एक कब्र के पत्थर पर हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ये शे'र भी खुदे हुए हैं। लेकिन नाम पढ़ा नहीं जाता।

ऐ पद और मान-सम्मान चाहने वालो! यह रहने की जगह नहीं है।
इसमें तो पहले लोगों में से भी कोई नहीं रहा।
एक दिन यही जगह तुम्हारा ठिकाना होगी।
एक दिन तुम्हारी ज़िंदगी की सुबह भी शाम में बदल जाएगी।
कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत।
(हर जान को मौत का मज़ा चखना है।)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद اُذْكُرُوْا مَوَاتَكُمْ بِالْخَيْرِ (अपने मृत लोगों का अच्छा ज़िक्र किया करो) के अनुसार हम यही दुआ करते हैं कि अपने वतन से दूर ऑस्ट्रेलिया की इस धरती पर दफ़न होने वाले अहमदी प्रेमियों को अल्लाह तआला अपनी रहमत के साये में जगह प्रदान करे और उनके दर्जे बुलंद करे। आमीन।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 20 दिसंबर 2013 ई. से 26 दिसंबर 2013 ई. के सौजन्य से)

28 अक्तूबर, सोमवार 2013 ई.

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ सुबह पाँच बजे मस्जिद बैतुलहुदा में तशरीफ़ लाए और नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ ने कार्यालय में आई डाक देखी और दुनिया के विभिन्न देशों से प्राप्त फ़ैक्स, पत्रों और रिपोर्टों पर आवश्यक निर्देश दिए।

ऑस्ट्रेलिया से न्यूज़ीलैंड के लिए रवानगी

आज ऑस्ट्रेलिया से न्यूज़ीलैंड के लिए रवाना होने का दिन था। जमाअत के पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की एक बड़ी संख्या सुबह से ही मस्जिद बैतुलहुदा के बाहरी आँगन में जमा थी। सिडनी की जमाअतों के अलावा ब्रिस्बेन, मेलबर्न और एडिलेड से भी अहमदी लोग लंबा सफ़र तय करके अपने प्यारे आका को विदा करने के लिए पहुँचे थे। सड़क के रास्ते आने वाले लोग बारह घंटे से भी अधिक का सफ़र करके पहुँचे थे। ये सभी प्रेमी दो कतारों में अपने आका के इंतज़ार में खड़े थे। विदाई का समय नज़दीक आ रहा था। बच्चियाँ विदाई के अवसर पर दुआ भरी कविताएँ पढ़ रही थीं। इन सभी लोगों के लिए निश्चय ही उदासी का माहौल था। कुछ लोग अपने आँसुओं को रोकने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन जो ऐसा नहीं कर सके, उनकी आँखों से आँसू बह निकले।

नौ बजकर पैंतालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अपने निवास स्थान से बाहर तशरीफ़ लाए और लोगों के पास से गुज़रते हुए अपना हाथ उठाकर सभी को अस्सलामो अलैकुम कहा। इसके बाद सामूहिक दुआ करवाई। जमाअत के लोगों के जोश भरे नारों और ख़ुदा हाफ़िज़ तथा फ़ी अमानिल्लाह की दुआओं के बीच सिडनी के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे किंग्सफ़ोर्ड स्मिथ (Kingsford Smith) के लिए रवानगी हुई। हुज़ूर अनवर की गाड़ी आगे बढ़ती रही और लोग पीछे से लगातार अपने हाथ हिलाकर विदाई देते रहे।

दस बजकर तीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ हवाई अड्डे पर तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर के हवाई अड्डे पहुँचने से पहले

सामान जमा कराने, विमान में सवार होने का प्रवेश पत्र प्राप्त करने और देश से बाहर जाने की जाँच की सभी कार्यवाहियाँ पूरी हो चुकी थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने हवाई अड्डे पर आए जमाअत के पदाधिकारियों और अन्य लोगों की ओर हाथ उठाकर अस्सलामो अलैकुम कहा और विशेष प्रतीक्षालय में तशरीफ़ ले आए।

हुज़ूर अनवर को विदा करने के लिए आदरणीय अमीर साहब ऑस्ट्रेलिया और जमाअत के कुछ अन्य पदाधिकारी विशिष्ट प्रतीक्षालय तक साथ आए। ऑस्ट्रेलिया की लजना की सदर साहिबा और अमीर साहब ऑस्ट्रेलिया की पत्नी हज़रत बेगम साहिबा मद्द ज़िल्लहुल आली को विदा करने के लिए विशिष्ट प्रतीक्षालय तक साथ आईं।

सवा बारह बजे जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ विमान में सवार होने के लिए प्रतीक्षालय से बाहर तशरीफ़ लाए तो जमाअत के पदाधिकारियों ने अपने प्यारे आका से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

आदरणीय अमीर साहब ऑस्ट्रेलिया महमूद अहमद शाहिद साहब विमान के दरवाज़े के पास तक हुज़ूर अनवर को विदा करने के लिए आए। हुज़ूर अनवर ने कृपा करते हुए अमीर साहब को हाथ मिलाने का सौभाग्य प्रदान किया।

एक और बहुत ही नेक और सच्चे अहमदी मित्र आदरणीय सुहैल अहमद साहब, जो ऑस्ट्रेलिया की हवाई सेवा क्वांटस एयर (Qantas Air) में काम करते हैं, विमान के दरवाज़े तक हुज़ूर अनवर के साथ आए। उन्हें यह सौभाग्य भी प्राप्त हुआ कि ऑस्ट्रेलिया में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की मेलबर्न और ब्रिस्बेन की यात्राओं के प्रबंध तथा हवाई अड्डे पर सभी व्यवस्थाएँ बहुत ही अच्छे और उत्तम ढंग से करने का अवसर मिला। अल्लाह तआला उन्हें दुनिया और आख़िरत में इसका बेहतरीन बदला प्रदान करे।

उक्त मित्र ने भी विमान के अंदर जाने से पहले अपने प्यारे आका से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। इसके बाद हुज़ूर अनवर विमान के अंदर तशरीफ़ ले गए।

ऑस्ट्रेलिया की हवाई सेवा क्वांटस एयर (Qantas Air) की उड़ान संख्या QF145 बारह बजकर पैंतीस मिनट पर न्यूज़ीलैंड के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे ऑकलैंड (Auckland) के लिए रवाना हुई।

न्यूज़ीलैंड में शुभ आगमन

मस्जिद बैतुल मुक़ीत में आगमन और शानदार स्वागत

तीन घंटे पंद्रह मिनट के सफ़र के बाद न्यूज़ीलैंड के स्थानीय समय के अनुसार पाँच बजकर पचास मिनट पर विमान ऑकलैंड (Auckland) के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। (न्यूज़ीलैंड का समय ऑस्ट्रेलिया से दो घंटे आगे है।)

विमान के दरवाज़े पर आदरणीय इक़बाल अहमद साहब, राष्ट्रीय सदर जमाअत न्यूज़ीलैंड और आदरणीय शफ़ीक़ुर्रहमान साहब, मुबल्लिग़ सिलसिला न्यूज़ीलैंड ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया। इस अवसर पर पुलिस इंस्पेक्टर राकेश नायडू गुरप्रीत साहब भी हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए मौजूद थे। उन्हें सरकारी विभाग की ओर से हुज़ूर अनवर की सुरक्षा के लिए नियुक्त किया गया है।

राष्ट्रीय सदर लजना आदरणीय बुशरा इक़बाल साहिबा तथा आदरणीय उज़मा रहमान और फ़रज़ाना शाहिद साहिबा ने हज़रत बेगम साहिबा मद्द ज़िल्लहुल आली का स्वागत किया।

देश में प्रवेश की जाँच के लिए विशेष रूप से एक काउंटर बनाया गया था। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ हवाई अड्डे से एक विशेष रास्ते से बाहर तशरीफ़ लाए। वहाँ दरवाज़े के पास ही हुज़ूर अनवर के लिए गाड़ी खड़ी की गई थी। यहाँ राष्ट्रीय मजलिसे आमिला के सदस्यों और जमाअत के अन्य पदाधिकारियों ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और अपने प्यारे आका से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इसके बाद वहाँ से रवानगी हुई। न्यूज़ीलैंड में ठहरने के दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ और क़ाफ़िले के सदस्यों के रहने का प्रबंध क्वेस्ट सर्विस्ड अपार्टमेंट्स (Quest Serviced Apartments) में किया गया था।

छह बजकर तीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ होटल क्वेस्ट (Quest) में तशरीफ़ लाए और अपने ठहरने के स्थान पर चले गए।

पौने सात बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने इसी होटल के एक बड़े कमरे में ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें मिलाकर पढ़ाईं। नमाज़ें अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने ठहरने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

कार्यक्रम के अनुसार आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास स्थान से बाहर तशरीफ़ लाए और जमाअत के केंद्रीय केंद्र मस्जिद बैतुल मुक़ीत के लिए रवाना हुए।

आठ बजकर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुल मुक़ीत में तशरीफ़ लाए। वहाँ जमाअत के पुरुषों, महिलाओं और बच्चों ने अपने प्यारे आका का स्वागत किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने अपना हाथ उठाकर सभी को अस्सलामो अलैकुम कहा और मस्जिद के अंदर तशरीफ़ ले गए। आपने नई बनाई गई मस्जिद का निरीक्षण किया और उसके विभिन्न हिस्सों को देखा। लंगरख़ाने की रसोई भी नई बनाई गई है। हुज़ूर अनवर ने उसका भी निरीक्षण किया और निर्देश दिया कि यहाँ के स्तर और ज़रूरतों के अनुसार रसोई को और बेहतर बनाया जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ ने साढ़े आठ बजे मस्जिद बैतुल मुक़ीत में मग़रिब और इशा की नमाज़ें मिलाकर पढ़ाईं। नमाज़ें अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनस्रिहिल अज़ीज़ वापस अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले आए।

देश न्यूजीलैंड दो बड़े द्वीपों और कई छोटे द्वीपों पर मिलकर बना है। बड़े द्वीपों को उत्तरी द्वीप और दक्षिणी द्वीप कहा जाता है। न्यूजीलैंड के उत्तर-पश्चिम में दो हजार मील की दूरी पर ऑस्ट्रेलिया स्थित है।

न्यूजीलैंड के सबसे नजदीकी पड़ोसी देशों में न्यू कैलेडोनिया, फिजी और टोंगा शामिल हैं। न्यूजीलैंड की आबादी 44 लाख है। इसमें 80 प्रतिशत लोग यूरोपीय मूल के हैं। यहां के पुराने रहने वालों को माओरी कहा जाता है। उनकी आबादी लगभग 15 प्रतिशत से कुछ अधिक है।

न्यूजीलैंड में अल्लाह तआला के फज़ल से नियमित रूप से जमाअत अहमदिया की स्थापना 1987 ई. में हुई। आज जमाअत की संख्या लगभग चार सौ है और यहां एक मजबूत तथा सक्रिय जमाअत कायम है। जमाअत का अपना सुंदर केंद्र है। वर्ष 2013 में जमाअत न्यूजीलैंड अपनी स्थापना की पच्चीसवीं वर्षगांठ मना रही है। इसी वर्ष जमाअत ने दो मंजिलों वाली अपनी पहली मस्जिद भी बनाई है। इस मस्जिद का नाम मस्जिद बैतुल मकीत है। अमीरुल मोमिनीन हज़रत खलीफतुल मसीह पांचवें अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इंशाअल्लाह तआला 1 नवंबर 2013 ई. शुक्रवार के दिन इस मस्जिद का उद्घाटन फरमाएंगे।

29 अक्टूबर, मंगलवार 2013 ई.

हुजूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ सुबह पांच बजे होटल से रवाना होकर सवा पांच बजे मस्जिद बैतुल मकीत पहुंचे और नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुजूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस अपने ठहरने के स्थान पर तशरीफ ले गए।

सुबह हुजूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया के विभिन्न देशों की जमाअतों से प्राप्त डाक, फैक्स, पत्रों और रिपोर्टों को देखा और उन पर अपने मुबारक हाथ से हिदायतें लिखीं।

माओरी राजा की ओर से हुजूर अनवर के सम्मान में स्वागत समारोह

आज हुजूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के सम्मान में न्यूजीलैंड की सबसे पुरानी जाति माओरी के राजा की ओर से एक स्वागत समारोह आयोजित किया गया।

न्यूजीलैंड के ये सबसे पुराने निवासी माओरी लोग तेरहवीं शताब्दी ईस्वी के दौरान ओशिनिया के पूर्वी भाग पोलिनेशिया से आकर इस द्वीप पर बसे थे। उन्होंने इस द्वीप का नाम आओतेआरओआ रखा, जिसे आजकल न्यूजीलैंड कहा जाता है। ये माओरी लोग एक साथ एक जाति के रूप में नहीं रहते थे, बल्कि छोटे-छोटे कबीलों में पूरे देश में फैले हुए थे। उन्होंने न्यूजीलैंड में नए पौधे भी लगाए, जिन्हें वे अपने पुराने रहने के स्थानों से साथ लाए थे। उनकी अपनी अलग संस्कृति, रीति-रिवाज, भाषा और परंपराएं हैं।

जब सत्रहवीं शताब्दी ईस्वी में यूरोप के लोग न्यूजीलैंड की धरती पर पहुंचे और वहां कब्जा करना चाहा तो माओरी कबीलों ने उनका कड़ा विरोध किया। माओरी लोग बहुत समझदार और बहादुर लड़ाकू थे। जब ब्रिटिश सेना ने महसूस किया कि माओरी लोगों को हराना मुश्किल है तो उन्होंने 1840 ई. में माओरी लोगों के साथ शांति समझौता कर लिया, जिसे वेटांगी की संधि कहा गया।

जब माओरी लोगों ने देखा कि ब्रिटिश निवासी धीरे-धीरे उनकी जमीनों पर कब्जा करते जा रहे हैं तो उन्होंने इसके खिलाफ आंदोलन शुरू कर दिया। वर्ष 1850 में माओरी लोगों ने ब्रिटेन की महारानी की तरह अपना एक राजा बनाने का फैसला किया। उत्तरी द्वीप के मध्य क्षेत्रों में रहने वाले माओरी कबीलों ने पुताताउ ते व्हेरोव्हेरो नाम के एक सरदार को अपना राजा चुन लिया।

वर्तमान राजा तुहेतिया पाकी 2006 ई. में राजा बना। यह माओरी लोगों का सातवां राजा है। उसका निवास नगारुआवाहिया नामक कस्बे में है, जो ऑकलैंड से लगभग सौ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। माओरी लोगों के लिए उनका सामुदायिक केंद्र बहुत महत्व रखता है। इसे मराए कहा जाता है और वे इसे एक पवित्र स्थान मानते हैं।

माओरी संस्कृति की एक खास बात मेहमानों के स्वागत का उनका अपना विशेष तरीका है। इसके लिए मराए में एक विशेष समारोह आयोजित किया जाता है। इस तरह स्वागत किए जाने के बाद मेहमान को उस मराए और कबीले का हिस्सा समझा जाने लगता है।

जब हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के न्यूज़ीलैंड आने का कार्यक्रम बना तो माओरी राजा की मराए परिषद ने अपने राजा की ओर से हज़ूर

अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला और जमाअत के प्रतिनिधिमंडल को मराए आने का निमंत्रण दिया। राजा की मंज़ूरी के बाद यह सूचना दी गई कि हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के लिए ऐसे स्वागत का प्रबंध किया जा रहा है, जो माओरी रीति-रिवाजों के अनुसार किसी शासनाध्यक्ष या किसी बड़े कबीले के राजा के लिए ही किया जाता है। इसी प्रकार माओरी केंद्र मराए पर माओरी झंडे के साथ लिवाए अहमदियत फहराने का भी प्रबंध किया गया।

कार्यक्रम के अनुसार नौ बजकर बीस मिनट पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान से बाहर तशरीफ़ लाए और माओरी केंद्र मराए के लिए रवाना हुए। साढ़े दस बजे हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ माओरी केंद्र पहुँचे, जहाँ आपका शाही स्वागत किया गया। जैसे ही हज़ूर अनवर की गाड़ी मुख्य द्वार पर रुकी, राजा के विशेष प्रमुख, जो राजा के बेटे थे, ने हज़ूर अनवर को अंदर आने का निमंत्रण दिया।

द्वार के अंदर प्रवेश करते ही माओरी संस्कृति के अनुसार तीन युद्धक युवक अपने पारंपरिक हथियारों के साथ आगे बढ़े और युद्ध के अंदाज़ में अपनी परंपरा के अनुसार यह चुनौती दी कि क्या आप लोग शांति के लिए आए हैं या युद्ध के लिए? जब तीनों युवकों को यह विश्वास हो गया कि आने वाले लोग शांति के उद्देश्य से आए हैं तो एक युवक ने नक्काशीदार खंजर जैसी लकड़ी का एक टुकड़ा प्रतीक के रूप में हज़ूर अनवर के सामने रख दिया कि यदि आप शांति के लिए आए हैं तो हम अपना हथियार आपके सामने पेश करते हैं। इस हथियार को दाएँ हाथ से उठाना इस बात का संकेत होता है कि हम शांति और दोस्ती के लिए आए हैं। चुनाँचे न्यूज़ीलैंड जमाअत के सदर साहिब ने लकड़ी के इस हथियार को दाएँ हाथ से उठाने के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दाएँ हाथ में पकड़ा दिया। इसके बाद बड़े शान और सम्मान के साथ हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला को मराए में ले जाया गया। हज़ूर अनवर के आने पर माओरी लड़के और लड़कियों ने समूह के रूप में अपनी माओरी भाषा में स्वागत गीत प्रस्तुत किया और आपका स्वागत किया।

हालाँकि राजा आम तौर पर इस समारोह में शामिल नहीं होता और दूसरे माओरी प्रमुख ही मेहमानों का स्वागत करते हैं, लेकिन आज हज़ूर अनवर के स्वागत के लिए आयोजित इस समारोह में राजा अपनी रानी के साथ शामिल हुआ। इसके अतिरिक्त हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ और हज़रत बेगम साहिबा मुद्दज़िल्लुहा आलीया को उस स्थान पर बिठाया गया, जिसे सबसे पवित्र माना जाता है और जहाँ बैठकर राजा ऐसे समारोहों की अध्यक्षता करता है।

इसके बाद माओरी के प्रमुख लोगों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। इन वक्ताओं ने अपने संबोधनों में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के मराए आने पर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की और आपके लिए प्रशंसा के शब्द कहे। एक प्रमुख ने कहा कि आज आदरणीय ख़लीफ़तुल मसीह के आने से हमारे सम्मान में वृद्धि हुई है। हज़ूर अनवर का यहाँ आना हमारे लिए सम्मान की बात है और इससे हमारे संबंध और भी मज़बूत होंगे। प्रत्येक संबोधन के बाद कुछ लोग खड़े होकर अपना पारंपरिक स्वागत गीत प्रस्तुत करते थे।

जमाअत की ओर से मुकर्रम शकील अहमद मुनीर साहिब ने अपना संबोधन प्रस्तुत किया। आपने माओरी भाषा में पवित्र क़ुरआन करीम का अनुवाद किया है और यह अनुवाद इसी वर्ष प्रकाशित हुआ है। जमाअत का संक्षिप्त परिचय देने के बाद आपने माओरी भाषा में पवित्र क़ुरआन करीम के अनुवाद का उल्लेख किया।

इसके बाद बच्चियों के एक समूह ने यह नज़्म तरन्नुम के साथ पढ़ी:

"है दस्ते क़िब्लानुमा ला इलाहा इल्लल्लाह"

जमाअत के प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों ने, जिनकी संख्या लगभग 25 थी, खड़े होकर इस नज़्म को साथ पढ़ा। इस प्रकार माओरी केंद्र का वातावरण ला इलाहा इल्लल्लाह की आवाज़ से गूँजता रहा।

इसके बाद माओरी परंपरा के अनुसार राजा ने आगे बढ़कर हज़ूर अनवर से हाथ मिलाया। इसी प्रकार माओरी समुदाय के अन्य बुज़ुर्गों और वहाँ उपस्थित लोगों ने बारी-बारी से जमाअत के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की और अपनी दोस्ती तथा संबंधों का इज़हार किया।

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ और प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों को मराए के उस बड़े कक्ष में ले जाया गया, जहाँ कीमती पुरानी वस्तुएँ आदि रखी हुई हैं और माओरी राजाओं के चित्र लगाए गए हैं। यहाँ भी केवल बहुत ही विशेष मेहमानों को प्रवेश दिया जाता है। इसी कक्ष में जलपान कराया गया। माओरी राजा हज़ूर अनवर के साथ बैठे रहे और हज़ूर अनवर उनसे बातचीत फ़रमाते रहे।

इसके बाद राजा ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को विभिन्न पुरानी और ऐतिहासिक वस्तुएँ दिखाईं। इनमें कई प्रकार के युद्ध के हथियार भी थे और दूसरी ऐसी वस्तुएँ भी थीं, जो कई वर्षों से इन कबीलों की विरासत के रूप में चली आ रही हैं।

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने आगंतुक पुस्तिका में लिखा:

Mirza Masroor Ahmad
Head of The Ahmadiyya Muslim Community

इसके बाद हज़ूर अनवर ने अपने हस्ताक्षर किए और तारीख़ 29-10-13 लिखी।

इसके बाद हज़रत बेगम साहिबा मुद्दज़िल्लुहा आलीया ने भी आगंतुक पुस्तिका में अपने हस्ताक्षर किए।

इसके बाद माओरी परंपराओं के अनुसार हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को इस कक्ष से बाहर उससे जुड़े हुए बरामदे में ले जाया गया, जहाँ आज के इस स्वागत समारोह का अंतिम कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें सबसे पहले न्यूज़ीलैंड जमाअत के राष्ट्रीय सदर साहिब मुकर्रम इक़बाल अहमद साहिब ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया।

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने माओरी राजा को पवित्र क़ुरआन करीम का माओरी भाषा में अनुवाद उपहार के रूप में दिया और क्रिस्टल से बना हुआ मिनारतुल मसीह भेंट किया। माओरी राजा ने भी हज़ूर अनवर की सेवा में एक उपहार पेश किया।

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने संक्षिप्त संबोधन में माओरी राजा का धन्यवाद किया।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम के साथ अपना संबोधन आरंभ करते हुए फ़रमाया:

मैं माओरी राजा का दिल की गहराइयों से धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने आज अपने पारंपरिक अंदाज़ में हमारा स्वागत किया और बड़े प्रेम तथा उत्साह के साथ हमारी आवभगत की। यह इतना शानदार स्वागत था, जैसा मैंने आज तक नहीं देखा।

हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पवित्र क़ुरआन करीम का जो माओरी भाषा में अनुवाद आपको दिया गया है, हमारे विश्वास के अनुसार यह वह अंतिम किताब है, जिसमें संपूर्ण धार्मिक विधान मौजूद है। यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतारी गई और अंतिम तथा संपूर्ण धार्मिक विधान के रूप में नाज़िल हुई। यह पवित्र क़ुरआन हमें इस बारे में मार्गदर्शन देता है कि हमने अपने रब को किस प्रकार पहचानना है, किस तरह ख़ुदा तआला से संबंध रखना है और फिर एक इंसान ने दूसरे इंसान के साथ किस प्रकार संबंध रखना है और उसके अधिकार किस तरह अदा करने हैं।

हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आज दुनिया को शांति, सुलह, प्रेम, मेल-मिलाप, भाईचारे और एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करने की आवश्यकता है। पवित्र क़ुरआन भी शांति, सुलह, भाईचारे और एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करने का यही संदेश देता है। यह केवल संदेश ही नहीं देता, बल्कि यह भी मार्गदर्शन करता है कि किन सिद्धांतों पर चलकर आप अपने समाज को एक शांतिपूर्ण समाज बना सकते हैं।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कि हम अहमदी इस बात पर विश्वास रखते हैं कि जिस मसीह ने इस दुनिया में दोबारा उतरना था, वह हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी के रूप में आ चुका है और आप जमाअत अहमदिया के संस्थापक हैं। इस्लाम की जिन शिक्षाओं को भुला दिया गया था, आप उन्हें दोबारा जीवित करने के लिए आए। आपने इस्लाम की असली और सच्ची शिक्षाएँ दुनिया के सामने पेश कीं। आज हम पवित्र क़ुरआन करीम के अनुवाद दुनिया की अलग-अलग भाषाओं में कर रहे हैं, ताकि दुनिया की हर क़ौम तक उसकी अपनी भाषा में इस्लाम का संदेश पहुँचे और उसे इस्लाम की असली और सच्ची शिक्षा का ज्ञान हो।

अंत में हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैं दुआ करता हूँ कि आज हमारे बीच जो यह दोस्ती कायम हुई है, वह हमेशा कायम रहे। मैं एक बार फिर राजा, रानी और आप सभी का धन्यवाद करता हूँ।

हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हमारी परंपरा है कि अंत में हम दुआ करते हैं। चुनाँचे हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने दुआ करवाई।

इस प्रकार आज का यह अत्यंत असाधारण समारोह अपने अंत को पहुँचा। इसके बाद माओरी राजा के बेटे और माओरी समुदाय के कुछ अन्य प्रमुख अधिकारी हज़ूर अनवर को बाहर गाड़ी तक छोड़ने आए और आपको अत्यंत सम्मान तथा आदर के साथ विदा किया।

रोटोरुआ के क्षेत्र की सैर

पहले से तय कार्यक्रम के अनुसार यहाँ से बारह बजकर पैंतीस मिनट पर रोटोरुआ नामक शहर के लिए रवाना हुए। लगभग दो घंटे के सफ़र के बाद दोपहर ढाई बजे रोटोरुआ शहर के एक होटल राइड्ज़ होटल पहुँचे। हज़ूर अनवर अपने रहने के लिए निर्धारित आवास में तशरीफ़ ले गए।

नमाज़ ज़ुहर और असर अदा करने का प्रबंध इसी होटल के एक कक्ष में किया गया था। चार बजकर पैंतालीस मिनट पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला तशरीफ़ लाए और नमाज़ ज़ुहर तथा असर मिलाकर अदा करवाई।

शेष ..

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّاۤ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ۞ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ○

अर्थात् कपटी और कमज़ोर ईमान वालों की तुलना में मोमिनों की दशा यह थी कि जब उन्होंने शत्रु की यह विशाल सेना देखी तो उन्होंने कहा कि इस सेना के बारे में तो अल्लाह तआला और उस के रसूल ने हमें पहले से ही सूचना दे रखी थी। इस सेना का आक्रमण तो अल्लाह और उसके रसूल की सच्चाई का प्रमाण है। यह विशाल सेना उनके विश्वास को विचलित न कर सकी अपितु ईमान और श्रद्धा में मुसलमान और भी प्रगति कर गए। मोमिनों की दशा तो यह है कि उन्होंने अल्लाह से जो प्रण किया था उसे पूर्णतया निबाह रहे हैं। अतः कुछ तो ऐसे हैं जिन्होंने अपने प्राणों का बलिदान देकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया तथा कुछ ऐसे हैं कि जिन्हें प्राण देने का अवसर तो प्राप्त नहीं हुआ परन्तु वे हर समय इस बात की प्रतीक्षा में रहते हैं कि उन्हें ख़ुदा के मार्ग में प्राण देने का अवसर प्राप्त हो तो वे प्राण दे दें। उन्होंने प्रारम्भ से ख़ुदा तआला से जो प्रण किया था उसे पूर्ण कर रहे हैं।

इस्लाम में शव का सम्मान

शत्रु जो ख़न्दक़ पर आक्रमण कर रहा था, किसी समय वह उसे फांदने में सफल भी हो जाता था। अतः एक दिन काफ़िरों के कुछ बड़े-बड़े सेनाधिकारी ख़न्दक फांद कर दूसरी ओर आने में सफल हो गए परन्तु मुसलमानों ने प्राणों पर खेल कर ऐसा आक्रमण किया कि उनके लिए वापस जाने के अतिरिक्त कोई चारा न रहा। अतः उस समय ख़न्दक़ फांदते समय काफ़िरों का नौफ़िल नामक एक बहुत बड़ा सरदार मारा गया। यह इतना बड़ा सरदार था कि क़ाफ़िरों ने यह विचार किया कि यदि उसके शव का अपमान हुआ तो अरब में हमारे लिए मुँह दिखाने का कोई स्थान नहीं रहेगा। अतः उन्होंने रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास सन्देश भेजा कि यदि आप उसका शव हमें दे दें तो वे आपको दस हज़ार दिरहम देने के लिए तैयार हैं।

उन लोगों का विचार तो यह था कि जिस प्रकार हम ने मुसलमान सरदारों अपितु स्वयं रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चाचा के नाक-कान उहद युद्ध में काट दिए थे, कदाचित इसी प्रकार आज मुसलमान भी हमारे इस सरदार के नाक-कान काट कर हमारी जाति का अपमान करेंगे परन्तु इस्लामी आदेश तो इससे बिल्कुल भिन्न हैं। इस्लाम शवों के अपमान की आज्ञा नहीं देता। अतः काफ़िरों का सन्देश मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास पहुँचा तो आप[स.] ने फ़रमाया इस शव का हमने क्या करना है, यह शव हमारे किस काम का है कि इसके बदले में हम तुम से कोई मूल्य लें। अपना शव बड़े आराम से उठा कर ले जाओ। हमें इस से कोई मतलब नहीं।[1]

विरोधी सेनाओं के गठबंधन के मुसलमानों पर आक्रमण

इन दिनों काफ़िर जिस आवेगपूर्ण तीव्रता से आक्रमण करते थे विलियम म्योर उस की चर्चा इन शब्दों में करता है

> "दूसरे दिन मुहम्मद (स.अ.व.) ने देखा कि संयुक्त सेनाएं उन पर सामूहिक तौर पर आक्रमण करने के लिए तैयार खड़ी हैं, उनके आक्रमणों को रोकने के लिए अत्यधिक सतर्क तथा प्रति पल सावधान रहना आवश्यक था। कभी वे सामूहिक तौर पर आक्रमण करते, कभी छोटे दलों में विभाजित हो कर विभिन्न चौकियों पर आक्रमण करते और जब किसी चौकी को कमज़ोर देखते तो अपनी सम्पूर्ण सेना उस चौकी पर एकत्र कर लेते तथा भीषण बाण-वर्षा की ओट में वे ख़न्दक़ पार करने का प्रयास करते थे। ख़ालिद और उमर जैसे प्रसिद्ध नेताओं के नेतृत्व में सेना नगर में प्रवेश करने के लिए वीरतापूर्ण आक्रमण करती। एक बार तो स्वयं मुहम्मद (स.अ.व.) का तम्बू शत्रु के निशाने पर आ गया परन्तु मुसलमानों के प्राणपण की भावनाओं से ओत-प्रोत मुकाबले और तीरों की बौछार ने आक्रमणकारियों को पीछे ढकेल दिया। यह आक्रमण दिन भर जारी रहा। चूंकि मुसलमानों की समस्त सेना मिलकर बड़ी कठिनाई से ख़न्दक़ की सुरक्षा कर सकती थी, मुसलमानों को आराम करने का अवसर प्राप्त न हुआ। रात हो गई, परन्तु रात को भी ख़ालिद के अधीन सैनिक दलों ने युद्ध जारी रखा तथा मुसलमानों को विवश कर दिया कि वे रात को भी अपनी चौकियों की पूरी तरह रक्षा करें परन्तु शत्रु के ये समस्त प्रयास व्यर्थ गए। ख़न्दक़ को शत्रु के यथेष्ट सैनिक भी कभी भी पार न कर सके।[1]

परन्तु इसके बावजूद दो दिन से युद्ध जारी था, सैनिक एक दूसरे से गुत्थम-गुत्था हो जाने का अवसर नहीं पाते थे, इसलिए चौबीस घंटे के युद्ध में संयुक्त सेना के मात्र तीन लोग मारे गए और मुसलमानों के पाँच। इस आक्रमण में सअद बिन मआज़[रज़ि.] औस क़बीले के सरदार तथा रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के प्राण न्योछावर करने वाले सहाबी अत्यधिक घायल हुए। इन आक्रमणों का परिणाम यह हुआ कि एक स्थान पर ख़न्दक़ के किनारे टूट गए तथा उस ओर से आक्रमण करने की संभावना बढ़ गई। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साहस तथा मुसलमानों के प्रति सहृदयता का यह हाल था कि आप सर्दी में रात को उठ-उठ कर उस स्थान पर जाते और उनका पहरा देते। हज़रत आइशा[रज़ि.] फ़रमाती हैं कि आप पहरा देते हुए थक जाते और सर्दी से निढाल हो जाते तो वापस आकर थोड़ी देर के लिए मेरे साथ लिहाफ़ में लेट जाते परन्तु शरीर के गर्म होते ही फिर उस स्थान की सुरक्षा के लिए चले जाते। इस प्रकार निरन्तर जागने से आप[स.] एक दिन बिल्कुल निढाल हो गए तथा रात के समय फ़रमाया काश इस समय कोई वफ़ादार मुसलमान होता तो मैं आराम से सो जाता। इतने में बाहर से सअद बिन वक़्क़ास[रज़ि.] की आवाज़ आई। आप[स.] ने पूछा कि क्यों आए हो? उन्होंने कहा आप का पहरा देने के लिए। आप[स.] ने फ़रमाया मुझे पहरे की आवश्यकता नहीं, तुम उस स्थान पर जहां ख़न्दक़ का किनारा टूट गया है जाओ और उस का पहरा दो ताकि मुसलमान सुरक्षित रहें। अतः सअद[रज़ि.] उस स्थान का पहरा देने के लिए चले गए और आप सो गए। विचित्र बात यह है कि जब आप[स.] ने बिल्कुल आरम्भ में मदीना में पदार्पण किया था तथा बहुत अधिक ख़तरा था, तब भी सअद[रज़ि.] पहरा देने के लिए आए थे। उन्हीं दिनों आप[स.] ने एक दिन कुछ लोगों के शस्त्रों की आवाज़ सुनी और पूछा कि कौन है? तो उबादा बिन बशीर ने कहा कि मैं हूँ। आप[स.] ने फ़रमाया तुम्हारे साथ कोई और भी है? उन्होंने कहा सहाबा की एक जमाअत है जो आप के तम्बू का पहरा देने के लिए आई है। आप ने फ़रमाया इस समय मुश्रिक (द्वैतवादी) ख़न्दक़ फांदने का प्रयत्न कर रहे हैं वहाँ जाओ और उनका मुक़ाबला करो, मेरे तम्बू को रहने दो।

बनू क़ुरैज़ा की मुश्रिकों (द्वैतवादियों) से मिलकर आक्रमण की तैयारी तथा उसमें असफलता

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है यहूद ने मदीने में गुप्त रूप से प्रवेश करने का प्रयास किया और उस में उनका जासूस मारा गया। जब यहूद को यह ज्ञात हुआ कि उन का षड्यंत्र प्रकट हो गया है तो उन्होंने अत्यधिक निर्भीकता से अरबों की सहायता आरम्भ कर दी। यद्यपि सामूहिक आक्रमण मदीने के पीछे की ओर से नहीं किया; क्योंकि उधर मैदान छोटा था तथा मुसलानों की सेना की उपस्थिति में उस ओर से बड़ा आक्रमण असंभव था परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् यह निर्णय किया कि यहूद और द्वैतवादियों की सेनाएं मुसलमानों पर एक निर्धारित समय पर आक्रमण कर दें, परन्तु उस समय ख़ुदा की सहायता एक अद्भुत रूप में प्रकट हुई जिसका विवरण यह है

ग़त्फ़ान कबीले का नईम नामक व्यक्ति हृदय में मुसलमान था। यह व्यक्ति भी काफ़िरों के साथ आया था परन्तु इस बात की प्रतीक्षा में था कि यदि मुझे कोई अवसर प्राप्त हो तो मैं मुसलमानों की सहायता करूँ। अकेला मनुष्य कर ही क्या सकता है, परन्तु जब उसने देखा कि यहूद भी काफ़िरों से मिल गए हैं और अब प्रगट रूप से मुसलमानों की सुरक्षा का कोई साधन दिखाई नहीं देता तो इन परिस्थितियों से वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने निर्णय कर लिया कि हमें हर हालत में इस षड्यंत्र के निवारण के लिए कुछ न कुछ करना चाहिए। अतः वह बनू क़ुरैज़ा के पास गया तथा उनके सरदारों से कहा कि यदि अरबों की सेना भाग जाए तो बताओ मुसलमान तुम्हारे साथ क्या करेंगे? तुम समझौता के अनुसार उनके साथी हो। अतः संधि करके उसे भंग करने के परिणामस्वरूप तुम्हें जो दण्ड दिया जाएगा उसकी कल्पना करो। उनके हृदय कुछ भयभीत हुए तथा उन्होंने पूछा फिर हम क्या करें? नईम ने कहा जब अरब संयुक्त आक्रमण के लिए तुम से कहें तो तुम उन से मांग करो कि तुम अपने सत्तर आदमी हमारे पास बतौर बंधक रख दो, वे हमारे दुर्गों की सुरक्षा करेंगे और हम मदीने के पीछे से उस पर आक्रमण कर देंगे। वह फिर वहां से हट कर द्वैतवादियों के सरदारों के पास गया और उन से कहा कि ये यहूद तो मदीना के रहने वाले हैं, यदि समय पड़ने पर ये तुम से विश्वासघात करें तो फिर क्या करोगे? यदि ये मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिए और अपने अपराध को क्षमा कराने के लिए तुम से तुम्हारे लोग बतौर बंधक मांगें और उन्हें मुसलमानों के सुपुर्द कर दें तो फिर तुम क्या करोगे? तुम्हें चाहिए कि उनकी परीक्षा लो कि क्या वे अपनी बात पर दृढ़ भी रहते हैं अथवा नहीं तथा उन्हें शीघ्र ही अपने साथ मिलकर सुनिश्चित रूप से आक्रमण करने के लिए आमंत्रित करो। काफ़िरों के सरदारों ने इस परामर्श को उचित समझते हुए दूसरे दिन यहूद को सन्देश भेजा कि हम एक संयुक्त आक्रमण करना चाहते हैं, तुम भी अपनी सेनाओं सहित कल आक्रमण कर दो। बनू क़ुरैज़ा ने कहा कि प्रथम तो कल हमारा 'सब्त' का दिन है इसलिए हम उस दिन लड़ाई नहीं कर सकते, दूसरे हम मदीना निवासी हैं और तुम बाहर के हो। यदि तुम युद्ध छोड़ कर चले जाओ तो हमारा क्या बनेगा? इसलिए यदि आप लोग हमें सत्तर सैनिक बतौर बंधक देंगे तो हम युद्ध में सम्मिलित होंगे।

काफ़िरों के हृदय में चूंकि पहले से सन्देह पैदा हो चुका था उन्होंने उनकी इस मांग को पूरा करने से इन्कार कर दिया और कहा कि यदि तुम्हारी हमारे साथ एकता सच्ची भावना पर आधारित थी तो इस प्रकार की माँग का कोई अर्थ नहीं। इस घटना से यहूद के हृदयों में शंकाएं जन्म लेने लगीं। जैसा कि नियम है कि जब शंकाएं उत्पन्न होने लगती हैं तो वीरता की भावना भी समाप्त हो जाती है। इन्हीं आशंकाओं और सन्देहों के रहते काफ़िरों की सेना रात को विश्राम करने के लिए अपने शिविरों में चली गई तो अल्लाह तआला ने अपनी सहायता का एक अन्य मार्ग खोल दिया। रात को एक भीषण आंधी आई जिसने शिविरों के पर्दे तोड़ दिए, चूल्हों पर से हांडियां उलट दीं तथा कुछ क़बीलों की आगें बुझ गईं। अरब के मुश्रिकों (द्वैतवादियों) में एक प्रथा थी कि वे सारी रात आग जलाए रखते थे और उसे वे शुभ शगुन समझते थे। जिसकी अग्नि बुझ जाती थी वह समझता था कि आज का दिन उसके लिए अशुभ है तथा वह अपने डेरे उठाकर रणभूमि से पीछे हट जाता था। जिन क़बीलों की अग्नि बुझ गई उन्होंने इस प्रथा के अनुसार अपने तम्बू उखाड़े और पीछे चल पड़े ताकि एक दिन पीछे प्रतीक्षा करके पुनः सेना में आकर सम्मिलित हों, परन्तु चूंकि दिन के विवादों के कारण सेना के सरदारों के हृदय में शंकाएं उत्पन्न हो रही थीं, जो क़बीले पीछे हटे उनके आस-पास के क़बीलों ने भी समझा की कदाचित् यहूद ने मुसलमानों के साथ मिलकर रात को छापा मारा है और हमारे आस-पास के क़बीले भागे जा रहे हैं। अतः उन्होंने भी बड़ी शीघ्रता के साथ अपने शिविर समेटने तथा रणभूमि से भागना आरम्भ कर दिया। अबू सुफ़यान अपने तम्बू में आराम से लेटा हुआ था कि इस घटना की सूचना उसे भी पहुँची। वह घबरा कर अपने बंधे हुए ऊँट पर जा चढ़ा और उस एड़ियां लगाना आरम्भ किया। अन्ततः उसके मित्रों ने उसे ध्यान दिलाते हुए कहा कि वह यह क्या मूर्खता कर रहा है। इस पर उसके ऊँट की रस्सियां खोली गईं और वह भी अपने साथियों सहित मैदान से भाग गया।

रात के अन्तिम तिहाई भाग में वह मैदान जिसमें काफ़िरों की बीस पच्चीस हज़ार सेना डेरा डाले हुए थी वह एक जंगल की भांति निर्जन हो गया। उस समय अल्लाह तआला ने रसूले करीम (स.अ.व.) को इल्हाम (ईशवाणी) के द्वारा बताया कि तुम्हारे शत्रु को हम ने भगा दिया है। आप[स.] ने वस्तु स्थिति ज्ञात करने के लिए किसी व्यक्ति को भेजना चाहा तथा अपने आस-पास बैठे सहाबा[रज़ि.] को आवाज़ दी। सर्दी के दिन थे और मुसलमानों के पास पर्याप्त कपड़े भी न होते थे, अत्यधिक ठण्ड के कारण जीभें तक सुन्न हो रही थीं। कुछ सहाबा[रज़ि.] कहते हैं कि हम ने रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की आवाज़ सुनी तथा हम उत्तर भी देना चाहते थे परन्तु हम से बोला नहीं गया; केवल एक हुज़ैफ़ा[रज़ि.] थे जिन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल क्या काम है? आप ने फ़रमाया तुम नहीं मुझे कोई अन्य व्यक्ति चाहिए। आप[स.] ने पुनः फ़रमाया कोई है? परन्तु फिर भी भयंकर सर्दी के कारण जो लोग जाग भी रहे थे वे उत्तर न दे सके। हुज़ैफ़ा[रज़ि.] ने पुनः कहा हे अल्लाह के रसूल! मैं उपस्थित हूँ। अन्ततः आप[स.] ने हुज़ैफ़ा[रज़ि.] को यह कहते हुए भेजा कि अल्लाह तआला ने मुझे सूचना दी है कि तुम्हारे शत्रु को हम ने भगा दिया है, जाओ और देखो कि शत्रु की क्या दशा है। हुज़ैफ़ा[रज़ि.] ख़न्दक़ के पास गए और देखा कि मैदान शत्रु-सैनिकों से पूर्णतया ख़ाली पड़ा था। वापस आए और शहादत का कलिमा उच्चारण करते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रसूल होने की पुष्टि की और बताया कि शत्रु मैदान छोड़ कर भाग गया है। प्रातः मुसलमान अपने तम्बू उखाड़ कर अपने-अपने घरों की ओर आने आरम्भ हुए।

बनू क़ुरैज़ा को विश्वासघात का दण्ड

बीस दिनों के बाद मुसलमानों ने सन्तोष का साँस लिया, परन्तु अब बनू क़ुरैज़ा का मामला निर्णय होने वाला था। उनका विश्वासघात ऐसा नहीं था कि उसकी उपेक्षा की जाती। मुहम्मद (स.अ.व.) ने वापस आते ही अपने सहाबा[रज़ि.] से फ़रमाया घरों में आराम न करो अपितु सायंकाल से पूर्व ही बनू क़ुरैज़ा के दुर्गों तक पहुँच जाओ। फिर आप[स.] ने हज़रत अली[रज़ि.] को बनू क़ुरैज़ा के पास भेजा कि वह उन से पूछें कि उन्होंने समझौते के विरुद्ध विश्वासघात क्यों किया? इस पर चाहिए तो यह था कि वे लज्जित होते, क्षमा-याचना करते या खेद प्रकट करते, उल्टा उन्होंने हज़रत अली[रज़ि.] और उनके साथियों को बुरा-भला कहना आरम्भ कर दिया तथा रसूले करीम (स.अ.व.) और आप के ख़ानदान की स्त्रियों को गालियाँ देने लगे और कहा हम नहीं जानते मुहम्मद (स.अ.व.) क्या वस्तु हैं, हमारा उनके साथ कोई समझौता नहीं। हज़रत अली[रज़ि.] उन का यह उत्तर लेकर वापस लौटे तो इतने में रसूलुल्लाह (स.अ.व.) सहाबा[रज़ि.] के साथ यहूद के क़िलों (दुर्गों) की ओर जा रहे थे। चूंकि यहूद गन्दी गालियां दे रहे थे तथा मुहम्मद (स.अ.व.) की पत्नियों और बेटियों के बारे में भी अपशब्दों का प्रयोग कर रहे थे, हज़रत अली[रज़ि.] ने इस विचार से कि आप को इन वाक्यों को सुनकर कष्ट होगा, कहा हे अल्लाह के रसूल ! आप क्यों कष्ट करते हैं, हम लोग इस लड़ाई के लिए पर्याप्त हैं, आप वापस जाइए। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फ़रमाया मैं समझता हूँ वे गालियां दे रहे हैं और तुम यह नहीं चाहते कि मेरे कान में वे गालियां पड़ें। हज़रत अली[रज़ि.] ने कहा हाँ, हे अल्लाह के रसूल ! बात तो यही है। मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फ़रमाया फिर क्या हो गया यदि वे गालियां देते हैं। मूसा नबी तो उनका अपना था, उसे इस से भी कहीं अधिक कष्ट पहुँचाए थे। यह कहते हुए आप[स.] यहूद के किलों की ओर चले गए, परन्तु यहूदी दरवाज़े बन्द करके क़िलाबन्द हो गए और मुसलमानों के साथ लड़ाई आरम्भ कर दी, यहां तक कि उनकी स्त्रियां भी लड़ाई में सम्मिलित हुईं। अतः क़िले की दीवार के नीचे कुछ मुसलमान बैठे थे कि एक यहूदी स्त्री ने ऊपर से पत्थर फेंक कर एक मुसलमान को मार दिया, परन्तु कुछ दिनों की घेराबन्दी के पश्चात् यहूद ने यह महसूस किया के वे लम्बा मुकाबला नहीं करत सकते। अतः उनके सरदारों ने रसूले करीम (स.अ.व.) से इच्छा प्रकट की कि वह अबूलुबाबह अन्सारी को जो उनके मित्र तथा औस क़बीले के सरदार थे उन के पास भिजवाएं ताकि वे उन से परामर्श कर सकें। आप[स.] ने अबू लुबाबह को भिजवा दिया। यहूद ने उन से यह परामर्श लिया कि क्या मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की इस माँग को कि निर्णय मेरे सुपुर्द करते हुए तुम हथियार फेंक दो; हम यह स्वीकार कर लें? अबू लुबाबह ने मुख से तो कहा हाँ! परन्तु अपने गले पर इस प्रकार हाथ फेरा जिस प्रकार कि वध का लक्षण होता है। रसूले करीम (स.अ.व.) ने अभी तक अपना कोई निर्णय व्यक्त नहीं किया था, परन्तु अबू लुबाबह ने अपने हृदय में यह समझते हुए कि उनके इस अपराध का दण्ड वध के अतिरिक्त और क्या होगा, बिना विचार किए सांकेतिक भाषा में उन से एक बात कह दी जो अन्ततः उनके विनाश का कारण हुई। अतः यहूद (बनू क़ुरैज़ा) ने कह दिया कि यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह का निर्णय मान लेते तो अन्य यहूदी क़बीलों की भांति उन्हें अधिक से अधिक यही दण्ड दिया जाता कि उन्हें मदीने से निर्वासित कर दिया जाता परन्तु उनका दुर्भाग्य था कि उन्होंने कहा हम मुहम्मद रसूलुल्लाह का निर्णय स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं अपितु हम अपने मित्र कबीला औस के सरदार सअद बिन मआज़[रज़ि.] का निर्णय स्वीकार करेंगे। जो निर्णय वह करेंगे हमें शिरोधार्य होगा, परन्तु उस समय यहूद में मतभेद हो गया। यहूद में से कुछ ने कहा कि हमारी जाति ने विश्वासघात किया है और मुसलमानों के व्यवहार से सिद्ध होता है कि उन का धर्म सच्चा है। वे लोग अपना धर्म त्याग कर इस्लाम में प्रवेश कर गए। एक व्यक्ति अमर बिन सादी ने जो उस जाति के सरदारों में से था अपनी जाति की भर्त्सना की और कहा कि तुम ने विश्वासघात किया है कि समझौता भंग किया है, अब या तो मुसलमान हो जाओ या सुरक्षा हेतु कर देने पर सहमत हो जाओ। यहूद ने कहा न मुसलमान होंगे, न ही कर देंगे कि इससे मर जाना उचित है। फिर उसने उन से कहा मैं तुम से विमुक्त हूँ और यह कह कर क़िले से निकल कर बाहर चल दिया। जब वह क़िले से बाहर निकल रहा था मुसलमानों के एक दल ने जिसके सरदार मुहम्मद बिन मुस्लिमा[रज़ि.] थे उसे देख लिया तथा उस से पूछा कि वह कौन है? उसने उत्तर दिया कि मैं अमुक व्यक्ति हूँ। इस पर मुहम्मद बिन मस्लिमा[रज़ि.] ने फ़रमाया

اَللّٰھُمَّ لَا تَحرمنی اقالۃ عرات الکرام [1]

अर्थात् आप सुरक्षा के साथ चले जाइए और फिर अल्लाह तआला से दुआ की कि हे मेरे उपास्य अल्लाह ! मुझे सज्जन व्यक्तियों की ग़लतियों पर पर्दा डालने के शुभकर्म से कभी वंचित न करना अर्थात् यह व्यक्ति चूंकि अपने कुकृत्य पर तथा अपनी जाति के दुष्कृत्य पर पश्चाताप करता है तो हमारा भी नैतिक कर्त्तव्य है कि उसे क्षमा कर दें। इसलिए मैंने उसे गिरफ़्तार नहीं किया और जाने दिया है। ख़ुदा तआला मुझे हमेशा ऐसे ही शुभकर्मों की शक्ति प्रदान करता रहे। जब मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को इस घटना का ज्ञान हुआ तो आप[स.] ने मुहम्मद बिन मस्लिमा[रज़ि.] की डांट-डपट नहीं की कि उस यहूदी को क्यों छोड़ दिया अपितु उस के इस कार्य की सराहना की।

> बनू क़ुरैज़ा के अपने नियुक्त किए गए मध्यस्थ सअद[रज़ि.] का निर्णय तौरात के अनुकूल था ये उपरोक्त घटनाएं व्यक्तिगत प्रकार की थीं। बनू क़ुरैज़ा जाति की हैसियत से अपनी हठ पर बने रहे तथा मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के आदेशों का इन्कार करते हुए सअद[रज़ि.] के निर्णय का आग्रह किया। मुहम्मद (स.अ.व.) ने भी उन की इस माँग को स्वीकार कर लिया। सअद[रज़ि.] को जो युद्ध में घायल हो चुके थे सूचना दी कि बनू क़ुरैज़ा तुम्हारा निर्णय स्वीकार करते हैं, आकर निर्णय करो। इस प्रस्ताव की घोषणा होते ही औस क़बीले के लोग जो बनू क़ुरैज़ा के काफ़ी समय से मित्र चले आए थे, सअद के पास दौड़ कर गए और आग्रह किया कि चूंकि 'ख़ज़रज' ने अपने मित्र यहूदियों को हमेशा दण्ड से बचाया है; आज तुम भी अपने मित्र क़बीले के पक्ष में निर्णय देना।

सअद[रज़ि.] घावों के कारण बनू क़ुरैज़ा की ओर सवारी द्वारा गए। उनकी जाति के लोग उनके दाएँ-बाएँ दौड़ते जाते थे और सअद[रज़ि.] से आग्रह करते जाते थे कि देखना बनू क़ुरैज़ा के विरुद्ध फैसला न देना परन्तु सअद[रज़ि.] ने केवल यही उत्तर दिया कि किसी मामले का निर्णय जिस व्यक्ति के सुपुर्द किया जाता है वह अमानतदार होता है, उसे ईमानदारी से फैसला करना चाहिए। मैं ईमानदारी से फ़ैसला करूँगा। जब सअद[रज़ि.] यहूद के क़िले के पास पहुँचे जहाँ एक ओर बनू क़ुरैज़ा क़िले की दीवार के साथ खड़े सअद[रज़ि.] की प्रतीक्षा कर रहे थे तथा दूसरी ओर मुसलमान बैठे थे। अतः सअद[रज़ि.] ने पहले अपनी जाति से पूछा क्या आप लोग वादा करते हैं कि मैं जो निर्णय करूँ उसे आप लोग स्वीकार करेंगे? उन्होंने कहा हाँ, फिर सअद ने बनू क़ुरैज़ा को सम्बोधित करते हुए कहा कि क्या आप लोग वादा करते हैं कि मैं जो निर्णय करूँगा वह आप लोग स्वीकार करेंगे? फिर लज्जाभाव से दृष्टि को नीचे रखते हुए; उस ओर संकेत किया जिस ओर मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) विराजमान थे, कहा इधर बैठे हुए लोग भी यह वादा करते हैं ? रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फ़रमाया हाँ। तत्पश्चात् सअद[रज़ि.] ने बाइबल के आदेशानुसार निर्णय सुनाया[1] । बाइबल में लिखा है

शेष ..

★ ★ ★

Editor: Shaikh Mujahid Ahmad
Dy. Editor: Syed Mohiuddin Farid
Editor : +91-9915379255
akhbaarbadarhindiqdn@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 05 November 2026 Issue No. 45

Act. Manager
Athar Ahmad Shamim
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 600/- (Per Issue : Rs. 12/-) (WEIGHT: 20-50 gms/issue)

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

123 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

बंदा अर्ज़ करता है कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1879 ईस्वी में बराहीने अहमदिया के बारे में घोषणा प्रकाशित की, तो उस समय आप बराहीने अहमदिया की रचना पूरी कर चुके थे और पुस्तक का आकार लगभग दो से ढाई हज़ार पृष्ठों तक पहुँच चुका था। इसमें आपने इस्लाम की सच्चाई के समर्थन में तीन सौ ऐसे ज़बरदस्त प्रमाण लिखे थे, जिनके बारे में आपका दावा था कि उनसे इस्लाम की सच्चाई सूरज की तरह साफ़ दिखाई देने लगेगी। आपका इरादा था कि जब इस पुस्तक को प्रकाशित करने का प्रबंध हो जाए तो आप साथ-साथ इसे और अधिक पूरा करते जाएँगे। इसके शुरू में एक भूमिका जोड़ेंगे, कुछ और शुरुआती बातें लिखेंगे और साथ ही ज़रूरत के अनुसार नीचे टिप्पणियाँ भी बढ़ाते जाएँगे।

चुनाँचे अब बराहीने अहमदिया के जो चार भाग प्रकाशित होकर मौजूद हैं, उनकी भूमिका और टिप्पणियाँ आदि सब पुस्तक के प्रकाशन के दौरान की हैं और उनमें मूल रूप से शुरू में लिखी गई पुस्तक का हिस्सा बहुत ही कम आया है, यानी केवल कुछ पृष्ठ ही शामिल हो सके हैं। इसका अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि आपने जो तीन सौ प्रमाण लिखे थे, उनमें से प्रकाशित बराहीने अहमदिया में केवल एक ही प्रमाण बयान हुआ है और वह भी अधूरा। इन चार भागों के छपने के बाद अगले भागों का प्रकाशन खुदा की मर्ज़ी के अनुसार रुक गया और सुना जाता है कि बाद में किसी कारण से इस शुरुआती रचना की लिखी हुई प्रतियाँ भी जलकर नष्ट हो गईं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बराहीने अहमदिया के चौथे भाग के अंत में 'हम और हमारी पुस्तक' शीर्षक के अंतर्गत जो विज्ञापन दिया है, उसमें आपने बताया है कि शुरू में जब बराहीने अहमदिया लिखी गई थी तो उसकी योजना कुछ और थी, लेकिन बाद में, यानी पुस्तक के प्रकाशन के दौरान, जब उसमें टिप्पणियाँ आदि लिखी जा रही थीं और पुस्तक छपकर प्रकाशित हो रही थी, तो स्थिति बदल गई। अर्थात् खुदा तआला की ओर से आपको ख़ुदा का भेजा हुआ होने का पद प्रदान किया गया और दूसरे लोक से आपको इसकी सूचना दी गई। इस पर आपने अपने पहले के इरादे छोड़ दिए और समझ लिया कि अब मामला खुदा के हाथ में है। वह जिस तरह चाहेगा, आपसे धर्म की सेवा का काम लेगा।

चुनाँचे इसके बाद आपकी ओर से धर्म की सेवा के लिए लगभग अस्सी पुस्तकें और सैकड़ों विज्ञापन तथा भाषण प्रकाशित हुए और अब आपकी मृत्यु के बाद भी आपके मानने वालों की ओर से धर्म की जो सेवा की जा रही है, यह सब उसी का परिणाम है। मैं समझता हूँ कि इस्लाम की जितनी सच्चाई उन तीन सौ प्रमाणों से साबित होती, जिन्हें आपने बराहीने अहमदिया में लिखा था, उससे कहीं अधिक सच्चाई केवल आपके अस्तित्व से साबित हुई, जिसका प्रकट होना बाद में महदवियत और मसीहियत के रूप में हुआ।

दूसरे शब्दों में, उन महान लेखों को अलग भी रख दिया जाए, जिन्हें बाद में खुदा तआला ने आपके हाथों प्रकाशित करवाया, तो केवल आपका पवित्र अस्तित्व ही उन तीन सौ प्रमाणों से बढ़कर इस्लाम की सच्चाई पर प्रकाश डालने वाला है। क्योंकि ये तीन सौ प्रमाण तो अधिकतर आम विद्वानों के ढंग से लिखे गए होंगे, लेकिन आपका अस्तित्व, जो नबूवत के पद में प्रकट हुआ, अपने अंदर एक अलग ही लगन और शक्ति रखता है।

124 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

मुझसे मौलवी शेर अली साहब ने बयान किया कि एक बार लाला मुलावामल ने मुझसे बताया कि एक बार मिर्ज़ा साहब अर्थात् हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे एक छोटी-सी संदूकची खोलकर दिखाई थी, जिसमें आपकी एक पुस्तक की लिखी हुई प्रति रखी हुई थी। आपने मुझसे कहा था कि बस, मेरी सारी जायदाद और माल यही है। बंदा अर्ज़ करता है कि यहाँ बराहीने अहमदिया की लिखी हुई प्रति का ज़िक्र है।

125 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

मुझसे मौलवी शेर अली साहब ने बयान किया कि एक बार पीर सिराजुल हक़ साहब का रोज़ा था, लेकिन उन्हें याद नहीं रहा और उन्होंने एक व्यक्ति से पीने के लिए पानी मँगवाया। इस पर किसी ने कहा कि क्या आपका रोज़ा नहीं है? पीर साहब को याद आ गया कि मेरा रोज़ा है। उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी वहाँ मौजूद थे। आपने पीर साहब से फ़रमाया कि जब रोज़े की हालत में इंसान भूलकर कोई चीज़ खा या पी लेता है तो यह खुदा की ओर से उसकी मेहमाननवाज़ी होती है। लेकिन आपने पानी के बारे में जो सवाल किया और सवाल करना पसंद नहीं किया जाता, इसलिए इस सवाल के कारण आप इस नेमत से वंचित रह गए।

126 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

मुझसे मियाँ अब्दुल्लाह साहब सनौरी ने बयान किया कि जब मैं पहली बार क़ादियान आया तो हज़रत साहब ने मुझसे पूछा कि तुम्हारे वालिद साहब का क्या हाल है? मैंने कहा, हुज़ूर! आपने किसका नाम ले लिया? मेरे वालिद तो बहुत बुरे आदमी हैं। शराब पीते हैं और उनमें बहुत बुरी-बुरी आदतें हैं। हज़रत साहब ने फ़रमाया कि तौबा करो। अपने वालिद के बारे में ऐसा नहीं कहना चाहिए।

फिर आपने मुझे यह हदीस सुनाई कि कभी-कभी एक आदमी बुरे काम करते-करते दोज़ख़ के किनारे तक पहुँच जाता है, लेकिन फिर वहाँ से लौट आता है और नेक काम शुरू कर देता है और आखिरकार जन्नत में दाखिल हो जाता है।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब बयान करते हैं कि इसके बाद मेरे वालिद साहब की हालत में बदलाव आया और आखिर में उनका अंजाम बहुत अच्छा हुआ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ उन्हें ऐसी मुहब्बत हो गई थी, जैसी किसी को अपने महबूब से होती है।

127 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

बंदा अर्ज़ करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सगी बहन मुराद बीबी का विवाह मिर्ज़ा ग़ुलाम गौस होशियारपुरी के साथ हुआ था, लेकिन मिर्ज़ा मुहम्मद बेग का जल्दी ही देहांत हो गया और हमारी फूफी को अपनी बाकी ज़िंदगी विधवा के रूप में बितानी पड़ी। हमारी फूफी को सपने और खुदा की ओर से मिलने वाली विशेष जानकारी प्राप्त होती थी।

उल्लेख किए गए मिर्ज़ा मुहम्मद बेग के छोटे भाई मिर्ज़ा अहमद बेग होशियारपुरी का विवाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चचेरे भाइयों अर्थात् मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन आदि की सगी बहन उमरुन्निसा के साथ हुआ था। इसी के गर्भ से मुहम्मदी बेगम पैदा हुई। मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन, मिर्ज़ा इमामुद्दीन आदि बहुत ही अधिक धर्म से दूर और नास्तिक स्वभाव के लोग थे। मिर्ज़ा अहमद बेग भी उनके बहुत अधिक प्रभाव में था और उन्हीं के रंग में रंगा रहता था।

ये लोग काफी समय से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से आसमानी निशान दिखाने की माँग करते रहते थे, क्योंकि वे इस्लाम के तरीकों से हटे हुए थे और उससे दुश्मनी रखते थे। मुहम्मदी बेगम के पिता अर्थात् मिर्ज़ा अहमद बेग भी उन्हीं के इशारों पर चलता था।

अब घटना इस प्रकार हुई कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक और चचेरे भाई मिर्ज़ा ग़ुलाम हुसैन थे, जो काफी समय से लापता थे और उनकी जायदाद उनकी पत्नी इमाम बीबी के नाम हो चुकी थी। यह इमाम बीबी मिर्ज़ा अहमद बेग की बहन थी।

अब मिर्ज़ा अहमद बेग की इच्छा हुई कि इमाम बीबी अपनी जायदाद उसके बेटे मिर्ज़ा मुहम्मद बेग के नाम कर दें, जो मुहम्मदी बेगम का बड़ा भाई था। लेकिन कानून के अनुसार इमाम बीबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सहमति के बिना यह जायदाद उक्त मुहम्मद बेग के नाम नहीं कर सकती थीं। इसलिए मिर्ज़ा

शेष पृष्ठ 06 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad